ओ३म्

पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५८ अंक -१२ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र जून (द्वितीय) २०१६

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आई.आई.आई.टी हैदराबाद में आयोजित कार्यशाला की झलकियाँ

डॉ. विनीत चैतन्य जी सम्बोधित करते हुए

आई.आई.आई.टी हैदराबाद में आयोजित कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रशिक्षक एवं प्रतिभागिगण

आई.आई.आई.टी हैदराबाद में आयोजित यज्ञ एवं प्रवचन में उपस्थित आर्यजन

सम्बन्धित विवरण पृष्ठ ३४ पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ **अंक** : १२
दयानन्दाब्द: १९२
विक्रम संवत्: ज्येष्ठ शुक्ल, २०७३
कलि संवत्: ५११७
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११७

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-
भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

जून द्वितीय २०१६

अनुक्रम

१. वैदिक धर्म प्रचार की शैली क्या हो?	सम्पादकीय	०४
२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०७
३. श्री ब्रजराज जी आर्य-एक परिचय	ओममुनि वानप्रस्थी	१४
४. सांई बाबा मत	सत्येन्द्र सिंह आर्य	१५
५. पुस्तक परिचय	देवमुनि	१८
६. मेरी अमेरिका यात्रा	डॉ. धर्मवीर	१९
७. छ: वैदिक दर्शनों का मतैक्य है	वैद्यनाथ शास्त्री	२४
८. जिज्ञासा समाधान-११३	आचार्य सोमदेव	३२
९. भारतीय संस्कृति एवं भाषाओं के....	ब्र. सत्यव्रत	३४
१०. संस्था-समाचार		३६
११. स्तुता मया वरदा वेदमाता-३६		४१
१२. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
- **उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं** -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

वैदिक धर्म प्रचार की शैली क्या हो?

सम्पूर्ण समय में सब कुछ विकसित या सब कुछ अविकसित नहीं हो सकता। इस बात को इस तरह भी समझा जा सकता है कि सदा सब कुछ एक जैसा नहीं होता। ज्ञान-विज्ञान की शक्ति इतनी प्रबल होती है कि समय को चलाने के लिये उसका थोड़ा होना भी बहुत होता है। हम उसे समाज का मुख भी कह सकते हैं। वह ही संसार में आगे चलता है। जैसे शरीर में मुख के अतिरिक्त बहुत कुछ है, परन्तु सब ज्ञानेन्द्रियाँ मुख पर ही आश्रित हैं, सारा शरीर उसी से चलता है। समाज को सभी वर्णों की आवश्यकता होती है, परन्तु समाज को विद्या और विज्ञान जानने वाला वर्ग ही चलाता है। पहले भी ऐसा ही था, आज भी ऐसा ही है और आगे भी ऐसा ही होगा। यदि विद्या वाला वर्ग सोचे कि वह कुछ नया नहीं जानेगा और समाज का संचालन करेगा, तो यह सोचना गलत होगा। तब तक समाज में उसका स्थान दूसरे ले चुके होंगे। ज्ञान ही मनुष्य को संचालित करेगा, चाहे वह किसी भी दिशा से आये या किसी भी भाषा से आये। जब कभी कोई संसार में प्रगति को अवरुद्ध करता है, तब गति की दिशा और स्थान बदल जाते हैं, परन्तु गति बनी रहती है। संसार में निरन्तर ऐसा ही होता रहता है।

इस बात को एक और तरह से भी समझ सकते हैं। इस जीवित शरीर में चेतना होने पर ही जीवन रहता है। चेतना के समाप्त होने पर शरीर तो रह सकता है, परन्तु उसमें जीवन नहीं हो सकता, इसी कारण मनुष्य शरीर के लिये सब कुछ करके भी अपने को अपूर्ण अनुभव करता है। यह अपूर्णता हमें पूर्णता के लिये कुछ करने को विवश करती है। यह विवशता धार्मिकता के बिना दूर नहीं हो सकती, इसे रूढ़िवादी धर्म कभी भी पूरा नहीं कर सकते। वैदिक धर्म की वैज्ञानिकता ही इस शरीर और आत्मा के प्रयोजन को सिद्ध करने में समर्थ है।

जो लोग बिना ज्ञान के चलना चाहते हैं, उन्हें उनका आग्रह समाज में पीछे धकेल देता है। प्राय: हम धर्म के नाम पर अपने को एक स्थान पर बाँध लेते हैं और जब बँध जाते हैं तो हमारी गति रुक जाती है। संसार में सबसे अधिक ईसाई और मुसलमान हैं, उन्होंने धर्म और विज्ञान से अपने को विचित्र तरह से जोड़ा। इस्लाम की विचाराधारा ज्ञान-विज्ञान पर रोक लगाने वाली है, वहाँ प्रगति के लिये कोई स्थान नहीं। ईसाइयत ने इसे दो भागों में बाँट लिया है, गति के लिये विज्ञान का आश्रय लिया है, परन्तु धर्म के बन्धन को भी नहीं छोड़ा है, इसलिये वह विज्ञान को स्वीकार करने पर भी अपने धर्म को वैज्ञानिक नहीं बना सका। वैदिक धर्म ने जब तक अपने ज्ञान-विज्ञान को जीवित रखा, तब तक वह विज्ञान-सम्मत था, गति करता रहा। जब वह वैज्ञानिक सोच से वञ्चित हो गया, प्रगति से शून्य हो गया।

इस युग में ऋषि दयानन्द का आगमन वैदिक धर्म को विज्ञान-सम्मत बनाने का प्रयास था। धर्मों की लड़ाई में ऋषि दयानन्द की वैज्ञानिकता ने वैदिक धर्म को गति दी। उनके अनुयायियों ने धर्म को तो अपनाया, परन्तु वैज्ञानिक सोच को भूल गये या वह उनसे छूट गया, परिणाम स्वरूप उनकी लड़ाई अन्य धर्म वालों के साथ रह गई, वैज्ञानिकों के साथ छूट गई। दूसरे शब्दों में आर्य समाज शिक्षा, विद्या एवं विज्ञान के क्षेत्र में अपना स्थान नहीं बना सका। वह उन्हीं धार्मिक लोगों से लड़ता रहा और आज भी लड़ रहा है। हमारी लड़ाई विज्ञान के बिना और वैज्ञानिक लोगों से न होकर रूढ़िवादी धार्मिक लोगों के साथ रह गई है, जो वैज्ञानिक सोच बिल्कुल नहीं रखते। ऋषि दयानन्द के समय हमारी धार्मिक लड़ाई हमें आगे ले जा सकी थी, परन्तु आज हमारी धार्मिक लड़ाई हमें आगे क्यों नहीं ले जा पा रही है- इसके विषय में विचार करने की आवश्यकता है।

प्रगति के अवरुद्ध होने का जो कारण हमारी समझ में आता है, वह यह है कि ऋषि दयानन्द के समय संसार भर में धर्म का प्रभाव अधिक था, विज्ञान का विकास थोड़ा था, प्रभाव भी थोड़ा था, इसलिये धर्म के नाम पर कही गई वैज्ञानिक बातों को धार्मिक लोग आसानी से स्वीकार कर लेते थे, परन्तु आज विज्ञान का अनुयायी वर्ग संसार में बहुत बढ़ गया है और धार्मिक वर्ग प्रतिशत में अधिक होने पर भी पहले से बहुत घट गया है, ऐसी स्थिति में आर्य समाज या वैदिक धर्म की लड़ाई वर्तमान धार्मिक परिस्थितियों में पिछड़ गई है। इसका एक कारण है- इन धार्मिक संगठनों का प्रभाव क्षेत्र, उनका संगठन तथा प्रचार

तन्त्र और उसके लिये प्राप्त उनके साधन हमारी तुलना में हजारों गुना अधिक हैं। हमारे पास वैज्ञानिक विचार तो हैं, परन्तु इन विचारों को गति देने वाला तन्त्र नहीं है। नये विचारक उत्पन्न करने के साधन नहीं हैं, प्रतिभाशाली लोगों तक पहुँचने के उपाय भी नहीं, व्यक्ति भी नहीं। इस स्थिति में हमारे किये जाने वाले प्रयास समुद्र के सम्मुख बिन्दु जैसे भी नहीं दीखते। ऐसी परिस्थिति में क्या किया जा सकता है और क्या किया जाना चाहिए?

प्रथम जिस परिवेश और समाज में हम लोग रह रहे हैं, उसमें दोनों प्रकार के लोग हैं, एक वे जो अपने को धार्मिक कहते हैं और दूसरे वे जो अपने को प्रगतिशील या वैज्ञानिक सोच का व्यक्ति मानते और समझते हैं। वैदिक विचारों के लिये जो अवसर पहले था, आज भी वही है। विज्ञान कितना भी आगे क्यों न बढ़ गया हो, कितना भी विकसित क्यों न हुआ हो, आज भी शरीर के स्तर से आगे नहीं बढ़ा है। मनुष्य के लिये शरीर ही अन्तिम नहीं है। यहाँ आकर व्यक्ति अपने को वैज्ञानिक विचारधारा वाला मान कर स्वयं को धर्म से- रूढ़िवादिता से दूर कर लेता है, परन्तु अपने-आपको विज्ञान की खोज से सन्तुष्ट नहीं कर पाता। ऐसे लोग अपने को वैज्ञानिक मानते हैं, परन्तु धार्मिकता की परम्पराओं से स्वयं को दूर रखते हुए विज्ञान के अन्दर जो अभाव है, उसे पूरा करने के लिये अपने को अध्यात्मवादी कहते हैं। उनका मानना है कि भले ही वे धर्म के नाम पर पाखण्ड को स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं हैं, परन्तु सोचते कुछ और हैं, जिसे विज्ञान से अभी तक समझा नहीं जा सका है। इसी कारण वे अपने को धार्मिक (रिलीजियस) न कहकर अध्यात्मवादी (स्प्रिच्युलिस्ट) कहते हैं।

ऋषि दयानन्द ने अपने विचार समाज के बुद्धिजीवी वर्ग में ही रखे थे। स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन काल में जितना प्रचार किया, साहित्य लिखा, उसका सम्पर्क तत्कालीन बुद्धिजीवी लोगों से रहा, जिसके कारण उनके विचारों का प्रभाव समाज के बुद्धिजीवी वर्ग पर देखा जा सकता है। राजा-महाराजा हों, न्यायाधीश, पत्रकार, विद्वान्, लेखक हों। सभी उनके विचारों से परिचित थे, चाहे लोग स्वामी जी के विचारों से सहमत हों या असहमत हों। इसी चर्चा के कारण देश में ही नहीं, देश के बाहर भी उनके विचारों की चर्चा, उनके जीवन काल में हम देख सकते हैं।

धीरे-धीरे आर्य समाज की चर्चा समाज में तो रही, परन्तु उसके केन्द्र से बुद्धिजीवी वर्ग बाहर होता गया, उस वर्ग के लोगों को आर्य समाज के विचार और सिद्धान्तों से परिचित होने का अवसर कम होता गया। इसके दो कारण रहे- एक तो शिक्षा के क्षेत्र में पठन-पाठन क्रम का पाश्चात्य विचारधारा वाले लोगों के हाथ में जाना, सरकार द्वारा इसी को स्वीकार करना। इस प्रयास से शिक्षा का प्रचार-प्रसार तो हुआ, परन्तु पूरा समाज दो भागों में बंट गया। एक अंग्रेजी शिक्षा में दीक्षित वर्ग अभिजात्य श्रेणी में आ गया, देसी भाषा में शिक्षा लेने वाले बहुसंख्यक शेष लोग पीछे रह गये। आर्य समाज का क्षेत्र जनसामान्य का क्षेत्र रहा, उनमें प्रचार तो हुआ, परन्तु विचारों का प्रसार नहीं हो सका, क्योंकि नई पीढ़ी के लोग इस देश में सामान्य लोग श्रोता तो हो सकते हैं, समाज के संचालक नहीं हो सकते, अतः संचालक तथाकथित शिक्षित वर्ग रहा। किसी भाषा के बोलने वाले बहुत हैं, इसलिये उनकी आवाज सत्ता पर प्रभावकारी हो, यह अनिवार्य नहीं है। अंग्रेज तो एक प्रतिशत भी नहीं थे, परन्तु उनकी सत्ता अंग्रेजी से चलती थी, आज यह संख्या समाज में पाँच प्रतिशत से भी अधिक है, अतः सत्ता ही मजबूत हुई है, समाज नहीं। शिक्षा में जो लोग हैं, उनतक वैदिक विचारों की पहुँच शून्य स्तर पर है, अतः समाज पर हम अपना विशेष प्रभाव डाले, ऐसी सम्भावना कम है।

सामान्य वर्ग परम्परागत धर्म व रुढ़िवाद के साथ बंधा है। उसे मन्दिर, मस्जिद, चर्च ने अपने साथ बांध रखा है, जिसका विकल्प आर्य समाज के पास नहीं है। उनसे बहुत परिवर्तन की आशा नहीं की जा सकती। शिक्षित और बुद्धिजीवी लोग भी उसी प्रकार धार्मिक अन्धविश्वास और परम्पराओं से बंधे हुए हैं, परन्तु उनको वैज्ञानिक विचारों से परिचित कराने पर उनमें स्वीकृति की सम्भावना अधिक होती है और उनकी स्वीकृति समाज पर प्रभावकारी होती है।

महर्षि दयानन्द का धर्म-वेद का धर्म, अध्यात्म और विज्ञान को एक साथ देखता है। आत्मा की अनुभूति की ओर जाने वाले मार्ग को वह धर्म कहता है और ज्ञान की प्राप्ति के मार्ग को विज्ञान कहता है। हम धर्म को विज्ञान समझे बिना ग्राह्य नहीं बना सकते। हमारी समस्या है- हम जिन्हें धार्मिक कहते हैं, वे सब विज्ञान विरोधी हैं, चाहे वे इस्लाम या ईसाइयत के अनुयायी हों या रूढ़िवादी हिन्दू

कहलाने वाले लोग। जो कोरे वैज्ञानिक हैं, उन्हें धर्म के नाम से भी चिढ़ है और जो कट्टर धार्मिक हैं, उन्हें विज्ञान से सम्बन्ध रखने की इच्छा भी नहीं है। अब वे शेष रहते हैं, जो धर्म को नहीं मानते, पर वैज्ञानिक दृष्टि रखते हैं तथा विज्ञान सम्मत धार्मिक विचारों को सुनने के लिये और स्वीकार करने के लिये तैयार हैं। वे ही हमारे कार्य के क्षेत्र में होने चाहिए। इन लोगों का कोई परिभाषित या चिह्नित वर्ग नहीं है। प्रत्येक स्थान पर जिनकी वैज्ञानिक बुद्धि में जिज्ञासा विद्यमान है, उनको इन विचारों से परिचित कराया जाये तो वे इन्हें सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं। आज उनको केन्द्र में रखकर प्रचार करने की आवश्यकता है।

किसी भी विचारधारा के प्रचार-प्रसार में व्यक्ति के विचारों में परिवर्तन लाना आवश्यक है। विज्ञापनों से प्रचार उन बातों का हो सकता है, जो मनुष्य की आवश्यकता है। चाहे फिर तेल, साबुन आदि या अन्य, उपभोग की वस्तु जिनके प्रति किसी भी मनुष्य का स्वाभाविक आकर्षण होता है। भाषणों से प्रचार तात्कालिक प्रभाव के लिये उपयोगी रहता है। आप कोई आन्दोलन चला रहे हैं, चुनाव लड़ रहे हैं, तब सार्वजनिक सभा, व्याख्यान अनिवार्य हो जाता है, केवल समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर या लेख देकर या पत्रक बाँटकर काम नहीं चलता, ये बातें सम्पर्क करने में सहायक अवश्य होती हैं, परन्तु इनसे प्रयोजन की सिद्धि नहीं होती।

मत, सम्प्रदाय धार्मिक विचारों का प्रभाव तो व्यक्ति के साथ निकट सम्पर्क से ही पड़ता है। सार्वजनिक सभा वार्ता कथा सत्संग मनुष्य को निकट लाने के लिये साधन है। सत्संग, सभा, कथा, वार्ता से थोड़े समय के लिये मनुष्य के विचारों पर प्रभाव पड़ता है, परन्तु इसकी निरन्तरता के लिये कर्मकाण्ड की आवश्यकता होती है। कोई मनुष्य आपकी बात सुनके क्या करे? जिससे आप के द्वारा बताये गये लाभ उसे प्राप्त हो सके। इस कर्मकाण्ड में भी ऐसे आचार्य गुरुओं का भक्तों और शिष्यों से निरन्तर सम्पर्क रहना आवश्यक है। गुरु लोग यजमानों के घर पर जायें अथवा यजमान गुरुओं के आश्रम पर पहुँचकर अपने विचारों को पुष्ट करें। जहाँ आचार्य शिष्य या साधु, सन्त, भक्तों का सम्पर्क बनता है, वहाँ धार्मिक परम्परा चलती है। इसके स्थापित होने में बहुत समय लगता है और इसका क्षेत्र भी बहुत लम्बा नहीं हो पाता फिर आज के वातावरण में आर्य समाज या वैदिक विचारों को केवल प्रचार करने मात्र से नहीं फैलाया जा सकता। जिन लोगों की आजीविका, व्यापार या स्वार्थ पुरातन परम्परा से जुड़ा है, उनके द्वारा इन विचारों से परिचित होने पर उचित मानने पर भी स्वीकार करना कठिन होता है। ऐसी परिस्थिति में वैदिक धर्म या विचार के प्रचार-प्रसार करने का क्या उपाय हो?

हमें एक बात स्मरण रखनी चाहिए- समाज के तीन प्रतिशत लोग ही समाज को संचालित करते हैं, परन्तु इन तीन प्रतिशत लोगों का ज्ञानवान और समर्थ होना आवश्यक होता है। समाज में बुद्धिजीवी लोग यदि किसी बात को स्वीकार कर लेते हैं, तब शेष लोगों को उसे स्वीकार करने में संकोच या कठिनाई नहीं होती। जो स्थापित है, उनको समझाना सबसे कठिन है। विचारों के प्रचार के लिये सबसे सरल मार्ग है- बुद्धिजीवी युवकों को, जो अभी ऊँच शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, उनको इन विचारों से परिचित कराया जाय, वे बुद्धिजीवी होने के साथ युवा होने के कारण जो विचार उन्हें उचित लगते हैं, विचारों को अपनाने में भी उन्हें कोई संकोच नहीं होती। यदि शिक्षा संस्थानों को विशेष रूप से महाविद्यालय विश्वविद्यालय को केन्द्र बना कर सर्वोच्च बुद्धि वाले युवकों को विचारों से जोड़ा जाय तो यह कार्य कुछ वर्षों में प्रभावकारी हो सकता है। पाँच से दस वर्षों में समाज पर प्रभाव परिलक्षित होने लगेगा तथा बीस वर्ष में आप इससे यथेच्छ परिणाम भी प्राप्त कर सकते हैं।

यह कार्य केवल कल्पना नहीं है अपितु महाराष्ट्र में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने जीवन के साठ वर्ष से अधिक समय इस पद्धति का प्रयोग कर इसकी सफलता का अनुभव किया है। किसी विचारधारा या संगठन के लिये दस-बीस वर्षों का समय बहुत नहीं होता। आवश्यकता है- योजना और निष्ठा से इस कार्य को करने की और धर्म का मूल वेद बुद्धिमानों के ही समझ में आ सकता है और उन्हीं के द्वारा इसका विस्तार भी हो सकता है।

हम कितने जिज्ञासुओं तक अपना समाधान पहुँचा सकते हैं, इस पर ही हमारी सफलता निर्भर करती है। ऋषि दयानन्द के विचार ही वैदिक धर्म को जीवित रख सकते हैं, ऐसा धर्म मनुष्यता को जीवित रख सकता है, जिससे वर्तमान और भविष्य दोनों का कल्याण हो। इसीलिये कहा है-

यतोऽभ्युदय निः श्रेयस् सिद्धिः स धर्मः।

- धर्मवीर

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

पं. गणपति शर्मा जी का मौलिक तर्क:-श्रीयुत् आशीष प्रतापसिंह लखनऊ तथा एक अन्य भाई ने मांसाहार विषयक एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर पूछा है। इस प्रश्न का उत्तर किसी ने एक संन्यासी महाराज से भी पूछा। प्रश्न यह था कि वृक्षों में जब जीव है तो फिर अन्न, फल व वनस्पतियों का सेवन क्या जीव हिंसा व पाप नहीं है? संन्यासी जी ने उत्तर में कहा, ऐसा करना पाप नहीं। यह वेद की आज्ञा के अनुसार है। यह उत्तर ठीक नहीं है। इसे पढ़-सुनकर मैं भी हैरान रह गया।

महान् दार्शनिक पं. गणपति शर्मा जी ने झालावाड़ शास्त्रार्थ में इस प्रश्न का ठोस व मौलिक उत्तर दिया। मांसाहार इसलिए पाप है कि इससे प्राणियों को पीड़ा व दु:ख होता है। वृक्षों व वनस्पतियों में जीव सुषुप्ति अवस्था में होता है, अत: उन्हें पीड़ा नहीं होती। हमें काँटा चुभ जाये तो सारा शरीर तड़प उठता है। किसी भी अंग पर चोट लगे तो सारा शरीर सिहर उठता है। पौधे से फूल तोड़ो या वृक्ष की दो-चार शाखायें काटो तो शेष फूलों व वृक्ष की शाखाओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। फूल तोड़ कर देखिये, पौधा मुर्झाता नहीं है। जीव, जन्तु व मनुष्य पीड़ा अनुभव करते हैं।

पं. गणपति शर्मा जी ने यह तर्क भी दिया कि मनुष्य का , पशु व पक्षी का कोई अंग काटो तो फिर नया हाथ, पैर, भुजा नहीं उगता, परन्तु वृक्षों की शाखायें फिर फूट आती हैं। इससे सिद्ध होता है कि वनस्पतियों वृक्षों में जीव तो है, परन्तु इनकी योनि मनुष्य आदि से भिन्न है। इन्हें पीड़ा नहीं होती, अत: इन्हें खाना हिंसा नहीं है। अहिंसा की परिभाषा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में भी पढ़िये। पं. गणपति शर्मा जी का नाम लेकर यह उत्तर देना चाहिये। पण्डित जी का उत्तर वैज्ञानिक व मौलिक है।

महर्षि दयानन्द के विषपान पर प्रश्न:- लखनऊ से ही आशीष प्रतापसिंह जी ने चलभाष पर बताया कि एक पौराणिक ने आक्षेप किया है कि ऋषि की मृत्यु विष दिये जाने से नहीं हुई। पं. लेखराम जी ने भी नहीं लिखा कि ऋषि का निधन विषपान से हुआ। उन्हें कहा गया कि उस पौराणिक का यह कथन मिथ्या है कि पं. लेखराम जी ने महर्षि को विष दिया जाना नहीं लिखा। पौराणिकों ने भारतीय इतिहास व महापुरुषों के जीवन पर न तो कभी कोई प्रश्न उठाया है और न ही विधर्मियों के वार का कभी उत्तर दिया है। ऋषि दयानन्द पर वार प्रहार करना इनकी दृष्टि में सनातन धर्म का प्रचार व सेवा है। परोपकारी में उत्तर पढ़ लेना और चुप करवा देना।

पं. लेखराम लिखित ऋषि जीवन में अजमेर के पीर जी का कथन पढ़िये। ऋषि को संखिया दिया गया। स्पष्ट लिखा है। पण्डित जी के साहित्य में (कुल्लियाते आर्य मुसाफिर) स्पष्ट लिखा है कि ऋषि को विष दिया गया। सम्पूर्ण जीवन-चरित्र में तत्कालीन कई इतिहासकारों के प्रमाण देकर यह सिद्ध किया गया है कि ऋषि जी को विष दिया गया। राव राजा तेजसिंह का स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम लिखा पत्र परोपकारिणी सभा के पास सुरक्षित है। कोई भी पढ़ ले। श्री गौरीशंकर ओझा का लेख, मुंशी देवीप्रसाद इतिहासकार, क्रान्तिकारी श्री कृष्णसिंह इतिहासकार के इतिहास को पढ़िये, समाधान हो जायेगा। मिर्ज़ा कादियानी ऋषि को हलाक करवाने (हत्या) का श्रेय (credit) लेता है। ये सब प्रमाण सम्पूर्ण जीवन-चरित्र में दिये गये हैं। ऋषि पर देश भर में आक्रमण किये गये। पूना, काशी, मुम्बई, सूरत, मथुरा, कर्णवास, गुजरांवाला, अमृतसर, वज़ीराबाद, गुजरात, कानपुर....कहाँ पर जानलेवा प्रहार नहीं किये गये? कुटिया जलाई गई, गंगा में फेंका गया और एक बार टाँग भी तोड़ी गई। इतनी बार और इस युग में किस विचारक सुधारक पर वार-प्रहार किये गये। न जाने इन पौराणिकों ने महर्षि के देश, धर्म व जाति रक्षा के लिये तिल-तिल कर जलने व जीने पर कभी भाव भरित हृदय से कुछ लिखा नहीं-कुछ कहा नहीं। कोई गिनती तो करे कि ऋषि पर कहाँ-कहाँ आक्रमण किया गया? कहाँ-कहाँ विष देने के षड्यन्त्र रचे गये?

ऋषि-जीवन विचार:-परोपकारी में पहले भी स्वामी

स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का यह उपदेश सन्देश दिया था कि ऋषि का जीवन चरित्र एक यति, योगी, योगेश्वर, बाल ब्रह्मचारी ऋषि और महर्षि का जीवन है। आर्यो! इसका पाठ किया करो। इसे पुस्तक समझ कर मत पढ़ा करो।

२६ अक्टूबर १८८३ को कर्नल प्रतापसिंह ने आबू पहुँच कर भक्तों से ऋषि का पता पूछा। इस पर यह कहानी गढ़ ली गई कि उसने ऋषि से पूछा यदि उन्हें डॉ. अली मर्दान पर विष देने का सन्देह है तो वह कहें, ताकि उस पर अभियोग चलाया जावे। आश्चर्य यह है कि मूल स्रोत का प्रमाण सामने लाने पर भी इस हदीस की जब यह पोल खुल गई, तब भी एक आध बन्धु ने ऋषि जीवन का पाठ करने तथा उस पर विचार करने का व्रत लेकर अपनी सोच न बदली। किसी के मन में यह न आया कि विष दिये जाने पर राज परिवार का कोई व्यक्ति (प्रतापसिंह भी) जोधपुर में ऋषि के पास नहीं आया। पं. भगवद्दत्त जी, आचार्य विरजानन्द जी इन दोनों माननीय विद्वानों का मत है कि ऋषि तब इतने निर्बल थे कि बोल ही नहीं सकते थे। मूल स्रोत परोपकारिणी सभा को सौंप दिया गया है। वहाँ प्रतापसिंह के आबू पहुँचने का तो उल्लेख है, परन्तु ऋषि जी से भेंट करने का संकेत तक नहीं। एक गप्पी ने नई गप्प गढ़ ली है कि जसवन्तसिंह भागा-भागा ऋषि जी का पता करने पहुँचा। न जाने यह नई हदीस कब गढ़ ली गई? हमें तो अभी इन्हीं दिनों पता चला है। ऋषि के कृत्रिम पत्र गढ़ लिये गये, परन्तु शोध-शोध का शोर मचाने वालों ने इस पर भी चुप्पी साध ली। नई पीढ़ी के युवक जिन्हें ऋषि मिशन प्यारा है, वे जागरूक होकर ऋषि-जीवन की रक्षा करें।

श्री शत्रुघन सिन्हा का ज्ञान घोटाला:- राजनेता संसद में अथवा विधान सभा में पहुँचते ही सर्वज्ञ बन जाते हैं। उन्हें किसी भी विषय पर बोलना व लिखना हो तो स्वयं को उस विषय का अधिकारी विद्वान् मानकर अपनी अनाप-शनाप व्यवस्था देते हैं। वीर भगतसिंह जी के बलिदान पर्व पर विख्यात् अभिनेता शत्रुघन हुतात्मा भगतसिंह जी पर टी. वी. में उनके केश कटवाने पर किसी कल्पित व्यक्ति से उनका संवाद सुना रहे थे। उनकी जानकारी का स्रोत वही जानें। हम तो इसे ज्ञान-घोटाला ही मानते हैं।

वह संसद में जाकर कुछ न मिलने पर भाजपा से तो खीजे-खीजे कुछ न कुछ बोलते ही रहते हैं। इतिहास का गला घोंटते हुए अभिनेता जी ने वीर भगतसिंह के परिवार को कट्टर सिख बताया। अभिनेता ने भगतसिंह जी की भतीजी लिखित ग्रन्थ पढ़ा होता, उनके पितामह तथा पिताजी की वैदिक धर्म पर लिखी पुस्तकें पढ़ी होतीं तो उनको पता होता कि यह परिवार दृढ़ आर्यसमाजी था। श्री धमेन्द्र जिज्ञासु जी ने तथा इस लेखक ने भी वीर भगतसिंह की जीवनी लिखी है।

राजनीति में आकर भगतसिंह जी के विचारों में भले ही कुछ परिवर्तन आया, परन्तु उनका आर्यसमाज से यथापूर्व सम्बन्ध बना रहा। उनको हिन्दू-सिख सबसे प्रेम था, परन्तु उनको कट्टर पंथी सिख बताना तो इतिहास को विकृत करना है। उनके बलिदान पर 'प्रकाश' आर्य मुसाफिर आदि पत्रों में महाशय कृष्ण जी, प्रेम जी ने उनके वैदिक रीति से संस्कार न करवाने पर सरकार की नीति का घोर विरोध किया। तब किसी ने यह न कहा और न लिखा कि उनका परिवार सिख है। उस समय के आर्य पत्र मेरे पास हैं। तब किसी ने यह न लिखा कि वह आर्य परिवार से नहीं था। उनके अभियोग में पहला अभियुक्त महाशय कृष्ण का बेटा आर्य नेता वीरेन्द्र था। श्री सुखदेव, प्रेमदत्त व मेहता नन्दकिशोर आदि कई आर्य क्रान्तिकारी तब उनके साथ थे। पं. लोकनाथ स्वतन्त्रता सेनानी आर्य विद्वान् ने उनका यज्ञोपवीत संस्कार करवाया। महान् आर्य दार्शनिक आचार्य उदयवीर उनके नैशनल कॉलेज के गुरु ने अन्त समय तक भगतसिंह के लिए जान जोखिम में डाली। शत्रुघन जी की आर्यसमाज से व इतिहास से ऐसी क्या शत्रुता हो गई है कि आपने आर्यसमाज को नीचा दिखाने के लिए सारा इतिहास ही तोड़ मरोड़ डाला है?

जब बार-बार कहा गया:-उ०प्र० के आर्य युवकों ने यह सूचना दी कि कादियानी मिर्ज़ाई नेट पर पं. लेखराम जी व आर्यसमाज के बारे में बड़ा विषैला प्रचार कर रहे हैं। एक बन्धु ने यह भी जानकारी दी कि विदेशों में भी मुसलमानों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिये पं. लेखराम जी की हत्या को इस्लामी सेवा के लिए अपनी एक उपलब्धि के रूप में प्रचारित कर रहे हैं। इसे कादियानी

नबी का खुदाई निशान व प्रमाण सिद्ध किया जा रहा है। बार-बार इन आर्यवीरों ने इस गन्दे व घिनौने वार का परोपकारिणी सभा द्वारा उत्तर प्रकाशित करवाने का अनुरोध किया गया।

मैंने उन्हें कहा कि वेश पंथियों से व महासम्मेलनों की दुहाई देने वाले किसी भी लीडर से उत्तर दिलवाओ। कोई आगे नहीं आयेगा तो फिर अवश्य उत्तर छपवाने का कर्त्तव्य निभाया जायेगा। किसने उत्तर देना था? अब आर्यवीरों के एक संगठन ने पं. लेखराम जी के अमर बलिदान व कादियानी नबी के मत पर एक बेजोड़ ग्रन्थ छपने दे दिया है। इसमें अनेक स्रोतों के प्रमाण दिये गये हैं। कोर्टों के निर्णय, मिर्ज़ाई साहित्य व मुस्लिम विद्वानों को भी यत्र-तत्र उद्धृत किया गया है। इतना बड़ा ग्रन्थ आज तक आर्यसमाज के किसी हुतात्मा पर नहीं छपा। मिर्ज़ाई मत पर पं. देवप्रकाश जी लिखित **दाफअ ओहाम** के पश्चात् आर्यसमाज का यह सबसे बड़ा ग्रन्थ कुल्लियाते आर्य मुसाफिर का इतिहास दोहराने वाला है। इस ग्रन्थ में मिर्ज़ाइयों की एक-एक घिसी पिटी बात का सप्रमाण उत्तर मिलेगा।

कुछ मास तो छपने में लगेंगे ही। हमने जोखिम भरा यह कार्य तो कर दिया है। लगनशील भाई व धर्म प्रचार में रुचि रखने वाली समाजें दस-दस-बीस-बीस व एक सौ प्रतियाँ लेकर आर्यवीरों को सहयोग देवें। बातें बनाने से तो बात नहीं बनती। कोई शोध वाला लेखक स्कालर उत्तर दे सकता है तो अवश्य आगे आकर अपनी लेखनी का चमत्कार दिखावे।

सलामतराय कौन थे?:- परोपकारी में इस सेवक ने महाशय सलामतराय जी की चर्चा की तो माँग आई है कि उन पर कुछ प्रेरक सामग्री दी जाये। श्री ओमप्रकाश वर्मा जी अधिक बता सकते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी की कोठी के सामने जो पहली बार जालंधर में उनके दर्शन किये, वह आज तक नहीं भूल पाया। भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमिनि जी के व्याख्यान में कादियाँ में यह प्रेरक प्रसंग सुना था कि कन्या महाविद्यालय की स्थापना पर केवल पाँच कन्यायें प्रविष्ट हुई थीं। उनमें एक श्री सलामतराय जी की बेटी भी थी। महात्मा मुंशीराम जी की पुत्री वेदकुमारी तो थी ही। शेष तीन के नाम मैं भूल गया हूँ। इस पर नगर में पोपों ने मुनादी करवाई कि बेटियों को मत पढ़ाओ। पढ़-लिख कर गृहस्थी बनकर पति को पत्र लिखा करेंगी। यह कार्य (पत्र लिखना) लज्जाहीनता है। ऐसी-ऐसी गंदी बातें मुनादी करवाकर कन्या विद्यालय के कर्णधारों के बारे में अश्लील कुवचन कहे जाते थे।

मेहता जी ने यह भी बताया था कि ऋषि भक्त दीवानों द्वारा यह मुनादी करवाई जाती थी कि विद्यालय में प्रवेश पानेवाली प्रत्येक कन्या को चार आने (१/४ रु०) प्रतिमास छात्रवृत्ति तथा एक पोछन (दोपट्टा) मिला करेगा। वे भी क्या दिन थे! कुरीतियों से भिड़ने वालों को पग-पग पर अपमानित होना पड़ता था। महाशय सलामतराय जी अग्नि-परीक्षा देने वाले एक तपे हुये आर्य यौद्धा थे।

जो प्रेरक प्रसंग एक बार सुन लिया, वह प्रायः मेरे हृदय पर अंकित हो जाता है। महात्मा हंसराज के नाती श्री अमृत भूषण बहुत सज्जन प्रेमी थे। महात्माजी पर मेरी पाण्डुलिपि पढ़कर एक घटना के बारे में पूछा, ''**यह हमारे घर की बात आपको किसने बता दी?**'' मैंने कहा, क्या सत्य नहीं है? उन्होंने कहा, ''एकदम सच्ची घटना है, परन्तु मेरे कहने पर आप इसे पुस्तक में न देवें।'' वह अठारह वर्ष तक अपने नाना के घर पर रहे। उन्हें इस बात पर आश्चर्य हुआ करता था कि इस लेखक को पुराने आर्य पुरुषों के मुख से सुने असंख्य प्रसंग ठीक-ठीक याद हैं।

प्रमाण मिलान की परम्परा अखण्ड रखिये:-अन्य मत पंथों के विद्वानों ने महर्षि दयानन्द जी से लेकर पं. शान्तिप्रकाश जी तक जब कभी आर्यों के दिये किसी प्रमाण को चुनौती दी तो मुँह की खाई। अन्य-अन्य मतावलम्बी भी अपने मत के प्रमाणों का अता- पता हमारे शास्त्रार्थ महारथियों से पूछ कर स्वयं को धन्य-धन्य मानते थे। ऐसा क्यों? यह इसलिये कि प्रमाण कण्ठाग्र होने पर भी श्री पं. लेखराम जी स्वामी वेदानन्द जी आदि पुस्तक सामने रखकर मिलान किये बिना प्रमाण नहीं दिया करते थे। ऐसी अनेक घटनायें लेखक को स्मरण हैं। अब तो आपाधापी मची हुई है। अपनी रिसर्च की दुहाई देने वाले पं. धर्मदेव जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, श्री पं. भगवद्दत्त जी

की पुस्तकों को सामने रख कुछ लिख देते हैं। उनका नामोल्लेख भी नहीं करते। प्रमाण मिलान का तो प्रश्न ही नहीं। स्वामी वेदानन्द जी ने प्रमाण कण्ठाग्र होने पर भी एक अलभ्य ग्रन्थ उपलब्ध करवाने की इस सेवक को आज्ञा दी थी। यह रहा अपना इतिहास।

एक ग्रन्थ के मुद्रण दोष दूर करने बैठा। प्राय: सब महत्त्वपूर्ण प्रमाणों के पते फिर से मिलाये। बाइबिल के एक प्रमाण के अता-पता पर मुझे शंका हुई। मिलान किया तो मेरी शंका ठीक निकली। घण्टों लगाकर मैंने प्रमाण का ठीक अता-पता खोज निकाला। बात यह पता चली कि ग्रन्थ के पहले संस्करण का प्रूफ़ पढ़ने वाले अधकचरे व्यक्ति ने अता-पता ठीक न समझकर गड़बड़ कर दी। आर्य विद्वानों व लेखकों को पं. लेखराम जी, स्वामी दर्शनानन्द जी, आचार्य उदयवीर और पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की लाज रखनी चाहिये। मुद्रण दोष उपाध्याय जी के साहित्य में भी होते रहे। उनकी व्यस्तता इसका एक कारण रही।

आर्य समाज का उपकार तो जानो मानो:- स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा नारायण स्वामी जी, लाला लाजपतराय जी, पं. नरेन्द्र जी के उद्‌गार पढ़िये। कल्याण मार्ग के पथिक के आरम्भ में समर्पण के शब्द बार- बार पढ़ें। उन विभूतियों ने सदैव स्वयं को ऋषि का, समाज का ऋणी माना। अब ऐसे घुसपैठिये समाज में घुस गये हैं जो अपनी डिग्रियों की धौंस दिखाकर समाज पर अपना भार व उपकार लादते रहते हैं। मित्रो! यह सोच घातक व विनाशक है। इससे संगठन निस्तेज हो रहा है। ठीक है, आपकी पहुँच बिग बॉस तक है, परन्तु तपस्या करना व जान जोखिम में डालना आपके बस की बात नहीं। जब पारिश्रमिक का रोना रोकर आर्य संगठन को कोसते हैं तो आर्यसमाज की शोभा घटेगी ही।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का यह कथन गायत्री जप करते समय कभी-कभी याद किया करो- ''आर्यो! यदि हम पेट के बल रींग-रींग कर भी चलें और हमारा रोम-रो भी नोच लिया जावे तो हम ऋषि के ऋण से उऋण नहीं हो सकते।''

मैं तो महाराज के इस वचन का भी जप किया करता हूँ। मैं एक छोटे से ग्राम में जन्मा था। आर्यसमाज की कृपा से देश विदेश के साहित्य में आज मेरा नामोल्लेख है। यह ऋषि का ऋण है। समाज का उपकार है।

पत्रों के दर्पण में:- इस काल के पत्रों के सामाजिक समाचारों की अस्सी सौ वर्ष के पत्रों में प्रकाशित समाचारों से तुलना करके अन्तर को समझिये। आर्य समाचार जुलाई सन् १८८६ में छपा:-''बड़ी प्रसन्नता व आनन्द की बात है कि सर्वशक्तिमान् ईश्वर की कृपा से रानीखेत में आर्यसमाज स्थापित हुआ है। परमात्मा इसे चिरायु करे।'' इससे अगले अंक में एक समाचार छपा:-''स्वामी आलाराम जी के प्रयास से एक और आर्यसमाज लखोकी जनपद लाहौर में स्थापित हुआ। सदस्य संख्या लगभग ३० है।'' इसी आलाराम स्वामी ने प्रयाग में सत्यार्थ प्रकाश पर राजद्रोह का केस चलाया था।

लण्डन का समाचार:- मार्गशीर्ष सं. १९४३ के अंक में एक विशेष समाचार छपा मिलता है:- ''लण्डन में महाराजा चम्बा के संग चन्दनसिंह ब्राह्मण नौकर आया था। तीन-चार वर्ष से यहीं था। सर्दी लगने से फेफड़े के रोग से चल बसा।'' कुछ दिन रुग्ण रहा व कष्ट भोगा। महाराजा चम्बा पैरिस आदि भ्रमणार्थ गये। कॉलेज छात्रावास के व्यवस्थापकों ने शव को निर्धन व लावारिस समझकर यहाँ की रीति के अनुसार उस को दबाना चाहा। आर्यसमाज लण्डन के मन्त्री को पता चला। तत्काल उसने शव को वैदिक रीति से दाहकर्म करने की चिन्ता की।

मन्त्री जी ने छात्रावास वालों को शव देने का प्रार्थना पत्र दिया। शव को दबाया जाना रोका गया। आर्यसमाज लण्डन को मृतक का वारिस स्वीकार किया गया। बहुत से हिन्दू भी सूचना पाकर शवयात्रा में सम्मिलित हो गये। लण्डन से कुछ दूर दाहकर्म संस्कार किया गया। शव पर स्थूल अक्षरों में लिखा गया:-

ओ३म्

आर्यसमाज की जय

भारतीय सेवक (कर्मचारी) का क्रीमेशन अर्थात् दाहकर्म

शेष अगले अंक में देखिये। आज तो घटना व प्रचार का समाचार नहीं होता। नेता, अभिनेता, मुख्य वक्ता, मन्त्री,

राज्यपाल की नामावली समाचारों में होती है।

प्रतीक्षा कीजिये:- ऋषि मिशन की तथा पंजाब प्रदेश की प्रथम धर्मोपदेशिका माता भगवती जी की जीवनी कुछ मास तक पाठकों के हाथ में पहुँच जावेगी। माई जी की जीवनी तत्कालीन अलभ्य स्रोतों के आधार पर तैयार हो जावेगी। माई जी की कोई लड़की नहीं थी-यह तो अब कोई झुठला नहीं रहा। यह सिद्ध व सुस्पष्ट हो चुका है। वह सधवा थी विधवा थी या संन्यासिन? इस पर विवाद व्यर्थ है। मेरा भी कोई आग्रह नहीं। तथ्य व प्रमाण बोलेंगे। विदेशी लेखकों का पूर्वाग्रह सर्वविदित है। निधन के समय वह ५५ वर्ष की थीं। तब भारत की मध्यमान आयु ३५ से भी कम थी। उ० भारत के आर्यसमाज की कई ऐतिहासिक घटनाओं से वह जुड़ी थीं। दबी पड़ी सामग्री का इस निमित्त अनावरण हो जायेगा। माई जी का सुन्दर चित्र भी दिया जायेगा। माई जी सब नेताओं से आयु में बड़ी थीं।

स्वर्णिम प्रेरक इतिहास को जानो व मानो:- जातियों, राष्ट्रों व संस्थाओं को जगाने व अनुप्राणित करने के लिये इतिहास शास्त्र का भी विशेष महत्त्व है। इतिहास तोता-मैना की किस्सा कहानी मात्र नहीं है। यह भी एक शास्त्र है। महर्षि ने तभी तो पूना में इतिहास शास्त्र पर कई व्याख्यान दिये। आर्यसमाज की इस समय मात्र १४१ वर्ष की आयु है। आर्यसमाज के गौरवपूर्ण इतिहास की सुरक्षा करने वाले चार विचारक व दूरदर्शी नेता हुए हैं- १. महात्मा मुंशीराम जी, २. आचार्य रामदेव जी, ३. स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी तथा ४. पं. विष्णुदत्त जी। जब मैं पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी व पं. विष्णुदत्त जी का इस प्रसंग में नाम लेता हूँ तो कुछ अदूरदर्शी मन्दभागी मन ही मन में खीजते व सटपटाते हैं। जिनका उद्देश्य ही आर्यसमाज के इतिहास को रौंदना हो वे इतिहास के विद्यार्थी राजेन्द्र जिज्ञासु के सत्य कथन को भला कैसे सह सकते हैं?

देश में कुछ व्यक्तियों ने घर वापिसी का शोर मचाया। झट से आर्यसमाज के पत्रों में शुद्धि आन्दोलन के अग्रणी आर्यों के नामों की सूची में किसी ऋषिदेव का नाम दे दिया गया। इस नाम का **इस क्षेत्र में कोई व्यक्ति हुआ ही नहीं।** ऋषि जी के पश्चात् पहली महत्त्वपूर्ण शुद्धि परोपकारिणी सभा द्वारा अब्दुल अज़ीज काज़ी फाज़िल की थी। वह उच्च पद पर आसीन अधिकारी थे। यह इतिहास हटाया गया। छिपाया गया। हमने सप्रमाण खोज दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी नवम्बर १९२६ को निज बलिदान से मात्र एक मास पूर्व लाहौर बच्छोवाली समाज के उत्सव पर गये। पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी सभा में उनके ठीक सामने बैठे सुन रहे थे। स्वामी जी ने सबको अन्तिम नमस्ते कही और यह भी कहा कि अब आपसे मिलन नहीं होगा। यह महाराज की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। इतिहास का, शोध का शोर मचाने वाले क्या जानें। दूसरे समाज ने भी उनका प्रवचन कराया। इस स्वर्णिम इतिहास को छिपाया गया या नहीं? गुरु के बाग के मोर्चा में जज को स्वामी **श्रद्धानन्द जी के अभियोग में मनुस्मृति विशेष रूप से पढ़नी पड़ी।** इतिहास रौंदने वाले इस घटना को क्यों छिपाते आ रहे हैं? या कहें कि वे इसे जानते ही नहीं। इसका प्रमाण (स्रोत) परोपकारिणी सभा के पास मिलेगा। न्यायाधीश ने दण्ड सुनाया तो भक्तों की भारी भीड़ सत्गुरु स्वामी श्रद्धानन्द जी के चरण स्पर्श करने को टूट पड़ी। कोर्ट से बाहर वृक्षों के नीचे महाराज को भक्तों के बीच आने दिया गया। देशवासियों को मुनि महान् ने क्या कहा- यह हम फिर बतायेंगे। नये नये उछलकूद करने वाले स्कालरों को मेरे इस कथन का प्रतिवाद करने की खुली छूट है।

- वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १२ से १९ जून, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

श्री ब्रजराज जी आर्य - एक परिचय

- ओममुनि वानप्रस्थी

श्री ब्रजराज जी आर्य का जन्म बीसवीं शताब्दी के द्वितीय दशक के मध्य में तह. ब्यावर, जिला, अजमेर राज. में हुआ। आपके पिताजी का नाम श्री गोपीलाल जी व माता जी का नाम दाखा बाई था। आपके पिताजी का खेती व चूने भट्टे का व्यवसाय था। उनका जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। श्री ब्रजराज जी १० वर्ष की आयु में ही आर्य समाज के सम्पर्क में आ गए थे। अल्प आयु में ही वे समाज के प्रति समर्पित हुए। उनके मन में समाज सेवा व देशप्रेम के प्रति लगन थी। उन्होंने आर्य वीर दल के शिविरों में बौद्धिक व शारीरिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। श्री रामदेव जी साम्भर वालों से लाठी व तलवार का ज्ञान प्राप्त किया, जिससे श्री ब्रजराज जी को लाठी व तलवार संचालन का अच्छा ज्ञान प्राप्त हुआ। वे एक अच्छे आर्यवीर होने के साथ अच्छे पहलवान भी थे। होली के अवसर पर श्री बजरंग महाराज अनेक स्वांग रचते हुए मुसलमानों के मौहल्ले से गुजरते थे। इस पर मुसलमानों ने बजरंग महाराज को पीटा, जिससे उनके अनेक चोटें आईं। इस पर ब्रजराज जी ने मुसलमानों के मौहल्ले में जाकर उनको ललकारा और मुसलमानों को खदेड़कर आर्य शक्ति का परिचय दिया। ब्रजराज जी पहलवानों के साथ रहने से मजबूत व निर्भीक हो गए। उनका विवाह श्रीमती भँवरी देवी के साथ सम्पन्न हुआ। श्री प्रभु आश्रित जी के द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया, उससे इनके सन्तानें हुईं। युवा अवस्था में ही इनके दो पुत्रों की मृत्यु हो गई। 'जन्म व मृत्यु एक अटल सत्य है' इससे परिचित अपने पुत्रों की मृत्यु को भी सहजता से स्वीकार कर लिया। सन् १९५० में वे व्यायामशाला के माध्यम से आर्य समाज के सेवाभावी कार्यकर्त्ता बन गए। अस्पताल में गरीबों व रोगियों को औषधि, फल वितरण, प्रसव हेतु सामग्री प्रदान करने, गरीबों की बच्चियों का विवाह करवाने हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करते थे। वे एक ईमानदार एवं सत्यवादी व्यक्ति थे। धीरे-धीरे उनकी सत्यवादिता व ईमानदारी समाज में प्रचारित होने लगी।

ब्यावर की जनता ने ऐसे कर्मठ समाजसेवी को नगर पालिका, ब्यावर के चुनाव में खड़े होने के लिये कहा, तो उन्होंने मना कर दिया। इस पर वहाँ के लोगों ने स्वयं ही चुनाव का फार्म भरकर, उनके हस्ताक्षर करवाकर, उनको विजेता बनवाया। चुनाव के प्रचार के लिये ब्रजराज जी ने एक रुपया भी खर्च नहीं किया। लगभग ३५ वर्ष तक उन्होंने समाज सेवा की। प्रत्येक तीन माह में जनता की मीटिंग बुलवाते तथा सभी विकास के कार्यों को बतलाते। उनकी समस्या व समाधान पर चर्चा करते। उक्त मीटिंग का प्रचार मैं स्वयं तांगे में बैठकर किया करता था।

सन् १९५६ में सम्पूर्ण भारत की प्रथम वातानुकूलित बस सेवा का परमिट माँगा। उस बस में ए.सी., पंखें, रेडियो, अखबार, बच्चों के लिये खिलौने, पानी और आरामदायक सीटों की व्यवस्था का दावा किया। उच्च न्यायालय में वकालात कर रहे एवं नगर परिषद् ब्यावर के चेयरमैन रह चुके श्री महेशदत्त भार्गव ने यहाँ तक कहा कि आर्यसमाजी श्री ब्रजराज आर्य कभी झूठ नहीं बोलते। ये जो कहते हैं वह करके दिखाते हैं और यदि ये अपने दावे में कहीं पर भी कमजोर साबित हुए तो स्वयं ही हमें परमिट लौटा देंगे। जब इस तरह की अत्याधुनिक सुविधा सम्पन्न बस के संचालन हेतु परमिट माँगी तो अनुमति प्रदान करने वालों को यह पूर्णतया मिथ्या लगा। और तब ब्रजराज जी आर्य की सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारीपूर्ण व्यक्तित्व के साक्षी एक सदस्य श्री महेशदत्त भार्गव के कहने पर परमिट मिली। और तब उस बस का निर्माण किया गया। यह बस ब्यावर से अजमेर के लिए संचालित की गई। उस जमाने में इस प्रकार की सर्वसुविधायुक्त बस का निर्माण एवं संचालन ने जनता व अधिकारियों को अचम्भित कर दिया। उस बस में बैठने वालों में मैं भी सम्मिलित था।

इसी प्रकार एक बार नगर परिषद् ब्यावर ने पानी के मीटर लगाने की तैयारी की, तो श्री ब्रजराज जी ने इसे जनता के विरुद्ध मानते हुए, उन मीटरों को नहीं लगाने के लिए आन्दोलन छेड़ दिया तथा पक्ष व विपक्ष के पार्षदों को आमन्त्रित किया। श्री ब्रजराज जी के पक्ष में पानी के मीटर नहीं लगाने हेतु अधिकांश पार्षदों एवं सम्पूर्ण जनता ने अपना समर्थन दिया।

अगस्त १९७५ में अजमेर में बाढ़ के समय काफी तबाही हुई, जिसमें ब्रजराज जी के नेतृत्व में आर्य समाज ब्यावर ने सेवा की। लगभग तीन-चार दिनों तक पाँच-पाँच हजार लोगों के लिए भोजन की व्यवस्था करवाई। लगभग ५० कार्यकर्त्ता प्रतिदिन सेवा में आते थे। गायत्री मन्त्र के उपरान्त सबको भोजन करवाया जाता था। वर्तमान कलेक्टर श्री कुमठ जी भी उनकी प्रशंसा करते थे। अजमेर के अतिरिक्त डेगाना, नागौर में भी उन्होंने सेवा प्रदान की।

२६ जनवरी २००१ में आये भूकम्प से तबाह हुए गुजरात राज्य में भी श्री ब्रजराज जी के नेतृत्व में आर्यसमाज ब्यावर ने सेवा प्रदान की।

श्री ब्रजराज जी काफी समय तक आर्य समाज ब्यावर के प्रधान व मन्त्री पद पर रह कर सेवा प्रदान की।

वर्तमान में श्री ब्रजराज जी की आयु १०० वर्ष से ऊपर हो गई है किन्तु वे प्रतिदिन दैनिक यज्ञ करना नहीं भूलते। यज्ञ की प्रेरणा उनको श्री प्रभु आश्रित जी ने प्रदान की थी।

सांई बाबा मत

- सत्येन्द्र सिंह आर्य

पिछले अंक का शेष भाग....

सांई मत ने इस प्रकार पतंजलि मुनि के योग दर्शन को तो अप्रासंगिक ही बता दिया। सांई की आत्मश्लाघा देखिए-

''केवल सांई-सांई के उच्चारण मात्र से ही उनके (भक्तों के) समस्त पाप नष्ट हो जाएँगे।''

''जो भक्तगण हृदय और प्राणों से मुझे चाहते हैं, उन्हें मेरी कथाएँ श्रवण कर स्वभावत: प्रसन्नता होगी। विश्वास रखो कि जो कोई मेरी लीलाओं का कीर्तन करेगा, उसे परमानन्द और चिरसन्तोष की उपलब्धि हो जाएगी। यह मेरा वैशिष्ट्य है कि जो कोई अनन्य भाव से मेरी शरण आता है, जो श्रद्धापूर्वक मेरा पूजन, निरन्तर स्मरण और मेरा ही ध्यान किया करता है, उसको मैं मुक्ति प्रदान कर देता हूँ।''

ऐसे मुक्ति प्रदाता सांई बाबा के चरित्र पर कुछ विशेष विवरण इस पुस्तक में नहीं दिया गया। जो कुछ कहा गया है वह बिना चमत्कार वाली चर्चा के नहीं है। सांई अनपढ थे और चिलम (धूम्रपान) पीते थे। एक घटना इस प्रकार है-चाँद पाटिल नाम के किसी व्यक्ति की घोड़ी खो गईथी। उसने सांई से इस सम्बन्ध में पूछा तो फकीर (सांईबाबा) बोले, ''थोड़ा नाले की ओर भी तो ढूँढ़ो।'' चाँद पाटिल नाले के समीप गए तो अपनी घोड़ी को वहाँ चरते देखकर उन्हें महान् आश्चर्य हुआ। उन्होंने सोचा कि फकीर कोई सामान्य व्यक्ति नहीं, वरन् कोई उच्च कोटि का मानव दिखाई पड़ता है। घोड़ी को साथ लेकर जब वे फकीर के पास लौटकर आए तब तक चिलम भरकर तैयार हो चुकी थी। केवल दो वस्तुओं की और आवश्यकता रह गयी थी। एक तो, चिलम सुलगाने के लिए अग्नि और दूसरा साफी (कपड़े का छोटा-सा टुकड़ा जिसको चिलम के नीचे लगाकर धूम्रपान किया जाता है) को गीला करने के लिए जल। फकीर (सांई बाबा) ने अपना चिमटा भूमि में घुसेड़कर ऊपर खींचा तो उसके साथ ही एक प्रज्जवलित अंगारा बाहर निकला और वह अंगारा चिलम पर रखा गया। फिर फकीर ने सटके से ज्यों ही बलपूर्वक जमीन पर प्रहार किया, त्यों ही वहाँ से पानी निकलने लगा और उसने साफी को भिगोकर चिलम से लपेट लिया। इस प्रकार सब प्रबन्ध कर फकीर ने चिलम पी और तत्पश्चात् चाँद पाटील को भी दी।

एक साधारण सी बात है कि फकीर चिलम पीता था। उसके वर्णन के लिए भी दो चमत्कार (जो कि सृष्टिक्रम के विरुद्ध हैं) जोड़ दिये। 'श्री सांई सच्चरित्र' नाम की इस ३०४ पृष्ठों वाली पुस्तक में सैकड़ों चमत्कारों का उल्लेख है। जिस भी व्यक्ति या घटना की चर्चा है, वह केवल चमत्कारों के सहारे सांई का महिमामण्डन करना, उसे त्रिकालज्ञ एवं दु:खहर्ता सिद्ध करना है। एक उदाहरण देखिए।

श्री बालाराम धुरन्धर नाम के एक व्यक्ति मुम्बई से चलकर शिरडी में सांई बाबा से मिलने के लिए आए। यहाँ शिरडी में उनके पहुँचने से पूर्व ही बाबा ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि ''आज मेरे बहुत से दरबारीगण आ रहे हैं।'' अन्य लोगों द्वारा बाबा के उपरोक्त वचन सुनकर धुरन्धर परिवार को महान् आश्चर्य हुआ उन्होंने अपनी यात्रा के सम्बन्ध में किसी को भी इसकी पहले से सूचना नहीं दी थी। सभी ने आकर उन्हें प्रणाम किया और बैठकर वार्तालाप करने लगे। बाबा ने अन्य लोगों को बतलाया कि ''ये मेरे दरबारी गण हैं, जिनके सम्बन्ध में मैंने तुमसे पहले कहा था।'' फिर धुरन्धर भ्राताओं से बोले, ''मेरा और तुम्हारा परिचय ६० जन्म पुराना है।'' मुसलमान तो पूर्व जन्म, पुनर्जन्म को मानते नहीं, ऊपर से ६० जन्मों के सम्बन्ध के स्मरण की बात तो निरी बकवास ही है।

भोजन और थोड़ा विश्राम करके जब वे लोग पुन: मस्जिद में आए और आकर बाबा के पैर दबाने लगे। ''इस समय बाबा चिलम पी रहे थे। उन्होंने बालाराम को भी चिलम देकर एक फूँक लगाने का आग्रह किया। यद्यपि अभी तक उन्होंने कभी धूम्रपान नहीं किया था, फिर भी चिलम हाथ में लेकर बड़ी कठिनाई से उन्होंने एक फूँक लगाई और आदरपूर्वक बाबा को लौटा दी। बालाराम के लिए तो यह अनमोल घड़ी थी। वे ६ वर्षों से श्वास रोग से पीड़ित थे, पर चिलम पीते ही वे रोगमुक्त हो गए।''

बाबा के चिलम पीने के दुर्गुण को दुर्गुण न बताकर उसको भी रोग-मुक्त करने का एक चमत्कार घोषित

कर दिया।

जल से दीपक जलाने का एक और चमत्कार-''बाबा को प्रकाश से बड़ा अनुराग था। वे सन्ध्या समय दुकानदारों से भिक्षा में तेल माँग लेते थे तथा दीपमालाओं से मस्जिद को सजाकर, रात्रिभर दीपक जलाया करते थे। यह क्रम कुछ दिनों तक ठीक इसी प्रकार चलता रहा। अब बनिए तंग आ गए और उन्होंने संगठित होकर निश्चय किया कि आज कोई उन्हें तेल की भिक्षा न दे। नित्य नियमानुसार जब बाबा तेल माँगने पहुँचे, तो प्रत्येक स्थान पर उनका नकारात्मक उत्तर से स्वागत हुआ। किसी से कुछ कहे बिना बाबा मस्जिद की ओर लौट आए और सूखी बत्तियाँ दीयों में डाल दी। बनिये तो बड़े उत्सुक होकर उन पर दृष्टि जमाये हुए थे। बाबा ने टमरेल उठाया जिसमें बिल्कुल थोड़ा-सा तेल था। उन्होंने उसे पुनः टीनपाट में उगल दिया और वही तेलिया पानी दीयों मे डालकर उन्हें जला दिया।''

तेल के बजाये पानी से दीये जलाने के साँई बाबा के तथाकथित चमत्कार का भण्डाफोड़ २२-१०-२०१४ को टी.वी. के चैनल (न्यूज २४) पर शाम के साढ़े चार बजे पौराणिक सन्तों ने किया। उन्होंने तेल मिश्रित बाती दीये में रखी और उसमें पानी भर लिया और दीया जला दिया। जितनी देर बाती में तेल का अंश है, उतनी देर तो दीया (उसमें पानी भरा होने पर भी) जलेगा ही। शंकराचार्य जी के समर्थक इन सन्तों ने कहा कि कि वे सांई-बाबा के सब चमत्कारों की पोल खोलेंगे।

सांई के व्यक्तित्व का यह विवरण इस पुस्तक में मिलता है-''बाबा दिन भर अपने भक्तों से घिरे रहते और रात्रि में जीर्ण-शीर्ण मस्जिद में शयन करते थे। इस समय बाबा के पास कुल सामग्री-चिलम, तम्बाकू, एक टमरेल, एक लम्बी कफनी, सिर के चारों ओर लपेटने का कपड़ा ओर एक सटका था जिसे वे सदा अपने पास रखते थे। सिर पर सफेद कपड़े का एक टुकड़ा वे सदा इस प्रकार बाँधते थे, कि उसका एक छोर बाएँ कान पर से पीठ पर गिरता हुआ ऐसा प्रतीत होता था, मानों बालों का जूड़ा हो। हफ्तों तक वे इसे स्वच्छ नहीं करते थे। पैर में कोई जूता या चप्पल भी नहीं पहनते थे। केवल एक टाट का टुकड़ा ही अधिकांश दिन में उनके आसन का काम देता था। सर्दी से बचने के लिए वे धूनी (लकड़ी जलाकर आग) से तपते थे।'' सांई बाबा की मृत्यु सन् १९१८ में हुई और उसके बाद तो सांई मन्दिरों में चढ़ावे का अम्बार बढ़ता ही गया। केवल अंध-श्रद्धा पर ही यह मत पुष्पित-पल्लवित होता गया एवं हो रहा है। मानवोपयोगी किसी सिद्धान्त या नियम से इस पंथ का कुछ भी सरोकार नहीं है। और इनके तथाकथित चमत्कारों की पोल पट्टी इनके के ही पौराणिक बन्धु सार्वजनिक रूप से कर रहे हैं। अन्य किसी को कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है।

पुट्टुपर्थी वाले श्री सत्य सांई बाबा मत का गोरख धन्धा भी शिरडी वाले बाबा के चमत्कार वाले बखानों से कुछ अलग नहीं है। अज्ञानान्धकार में जकड़े हिन्दू समाज में ताबीज, कण्ठी, झाड़-फूँक और भभूत का भ्रमजाल चरम पर है। सत्य सांई बाबा सारी उम्र हवा में से भभूत (राख) पैदा करने का दावा करते रहे। उनके कई भक्त तो उनके चित्र में से भी भभूत निकलने का दावा करते थे। यह गनीमत रही कि उनके शव में से भभूत नहीं निकली। ये लोग भभूत को चमत्कारी दवा बताते थे, परन्तु विरोधाभास देखिए कि जो बाबा भभूत से रोग ठीक करने का उपक्रम करता था, उसी ने पुट्टुपर्थी में ५०० करोड़ की लागत से एक सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल भी स्थापित किया। जब भभूत से ही रोग ठीक हो रहे थे, तो सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल की स्थापना करने का औचित्य समझ से परे है, पर सत्यानारायण राजू उर्फ सत्य-सांई बाबा को पता था कि राख से कुछ होना जाना नहीं है। इसीलिए ८६ वर्ष की आयु में जब उनके गुरदे, लिवर, फेफड़े आदि जवाब देने लगे, तो बाबा को भी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में ही भर्ती कराया गया, राख का सहारा नहीं लिया गया। सच्चाई सिर चढ़कर बोली।

वैदिक वाङ्मय में एवं रामायण, महाभारत जैसे इतिहास ग्रन्थों में कहीं भी भभूत (राख) का किसी औषधि या आशीर्वाद के रूप में उल्लेख का प्रश्न ही नहीं है। यह भ्रमपूर्ण अवधारणा उन नाथों, सिद्धों, तथाकथित योगियों के सम्प्रदायों से उत्पन्न हुई है जिनका शास्त्र सम्मत प्रामाणिक वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में कोई स्थान नहीं है। ये लोग आबादी से दूर निर्जन स्थानों में वनों में आग जलाकर (जिसे उनकी भाषा में धूनी लगाना कहा जाता था) बैठते थे और किसी नाम या तथाकथित मन्त्र का जाप करते थे। यही उनका तप था। धीरे-धीरे उन लोगो ने उदरपूर्ति के

लिए यह प्रचार शुरु कर दिया कि उनके मन्त्र-जाप से वह धूनी (अग्नि) अलौकिक शक्ति सम्पन्न हो जाती है, जिसके पास बैठकर वे जप करते हैं, और उसकी राख भी। कई फकीरों ने उसी राख से मस्तक पर तिलक लगाना आरम्भ कर दिया, उसी को शरीर पर लगाना आरम्भ कर दिया । यही बाद में आशीर्वाद के तौर पर और रोगोपचार के लिए दवा के रूप में बाँटी जाने लगी। यही राख सत्य सांई बाबा का मुख्य चमत्कार बन गयी। उनके शिष्य जाने-अनजाने में इतने भ्रमित हुए कि मरे हुए बाबा के लिए भी कहते रहे कि बाबा समाधि लगाए हैं। बड़े नाटकीय ऊहापोह के पश्चात् उनके शव का अन्तिम संस्कार किया जा सका।

भभूतवादियों ने यह प्रचार बड़े जोर शोर से किया कि जो इस भभूत (भस्म) को धारण करता है, उससे तो मृत्यु भी डरती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कहा है- ''जब रुद्राक्ष भस्म धारण करने से यमराज के दूर डरते हैं, तो पुलिस के सिपाही भी डरते होंगे? जब रुद्राक्ष भस्म धारण करने से कुत्ता, सर्प, सिंह, बिच्छु, मच्छर और मक्खी आदि भी नहीं डरते तो न्यायाधीश (यमराज) के गण क्यों डरेगे?'' सत्यार्थ प्रकाश -एकादश समुल्लास

सांई बाबाओं की आध्यात्मिक शक्ति का शोर मात्र छल कपट और हाथ की सफाई के अलावा कुछ नहीं था। चमत्कारों के सहारे उन्होंने भोली भाली, ज्ञान-शून्य जनता को ठगा और उनके कर्त्ताधर्त्ता अब भी ठग रहे हैं। कोई तर्क संगत, बुद्धिगम्य और मानवोपयोगी, विज्ञान-परक सिद्धान्त इन्होंने प्रतिपादित नहीं किया। चमत्कारों का प्रोपैगेण्डा, ढौग, छल-कपट, सांई का महिमा मण्डन अवतारीकरण, ईश्वरीकरण ही इस मत का सर्वस्व है।

सन्दर्भ पुस्तकें

१. श्री सत्य सांई बाब का कच्चा चिट्ठा
२. श्री सांई सच्चरित्र
३. अवतार गाथा
४. सरिता पाक्षिक पत्रिका का अगस्त २०१४ (द्वितीय) अंक
५. सद्गृहस्थ सन्त-भक्त रामशरण दास

- ७५१/६, जागृति विहार, मेरठ, (उ.प्र.)

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

पुस्तक – समीक्षा

पुस्तक का नाम - **मानव धर्म शास्त्र का सार**
लेखक - पं. भीमसेन शर्मा
प्रकाशक - आर्य समाज (शहर) बड़ा बाजार,
सोनीपत , हरियाणा
पृष्ठ संख्या - २२६ **मूल्य** - २००=००रु.

मनु स्मृति धर्म प्राण है। समाज में मनु को अकारण अपमानित किया जा रहा है। उन पर अनेक आक्षेप लगाये जा रहे हैं। पं. भीमसेन शर्मा का साहस है कि आक्षेपों का भी निराकरण किया है, पूर्ण समाधान के साथ विचार प्रस्तुत किये हैं। लेखक को साधुवाद है।

मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर उसे अनेक कर्त्तव्यों का निर्वाह करना पड़ता है। उसके लिए धर्म को समझना भी नितान्त आवश्यक है। मनु महाराज ने धर्म के जो लक्षण बताये हैं, उन्हें किसी जाति, सम्प्रदाय अथवा वर्ण का व्यक्ति मना नहीं कर सकता है। धर्म के दस लक्षणों को यथावत् समझना आवश्यक है। मनुष्य को जीवित रहने के लिए तीन शरीर (स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण) साधन के रूप में प्राप्त हैं। यह सम्पत्ति स्वयं की है।

धर्म के लोग ठेकेदार बन रहे हैं। धर्मगुरुओं ने बाह्य आडम्बर फैला रखे हैं। वे स्वयं अहम् ब्रह्मास्मि कहकर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। धर्म के नाम पर लूट मची हुई है। मानव जीवन में धर्म का बड़ा महत्त्व है, धर्म नहीं तो वह निरा पशु है। **धर्मेण हीना पशुभिर्समानाः।** आज वेदों के प्रति आस्था नहीं रही केवल नाम सुनने से क्या? वेदों में क्या है? उसका प्रचार-प्रसार करना आवश्यक है। धर्म हमारी रक्षा करता है 'धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः। तस्माद् धर्मो न हन्तव्यों मा नो धर्मो हतोऽवधीत्।' आज शिक्षित वर्ग ही धर्म को पाठ्यक्रम से अलग करने की बात कर रहे हैं, जबकि शिक्षा में सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय की शिक्षा होनी चाहिए।

मनुस्मृति एवं मनु महाराज के विषय में अनेक भ्रामक प्रचार किये जा रहे हैं। वे लोग आँख के अंधे व नाम नैनसुख वाले हैं। उन्होंने गूढ़ता को, कथन को समझने का प्रयास ही नहीं किया। आज के राज नेता भी इस जाल में है। मनु ने किसी के प्रति हेय या घृणा का रूप नही रखा। मानव धर्म शास्त्र में-सम्पूर्ण वेद को धर्म का मूल कहा है। धर्म के तीन स्तम्भ हैं- यज्ञ, अध्ययन और दान।

लेखक ने मनुस्मृति का सार जनमानस के सामने रखा है। जो प्रक्षिप्त है, उसपर भी क्यों कैसे से समाधान कर स्पष्ट किया है। विषय सूची में ५३ बिन्दु रखे हैं। धर्म अर्थ विचार, सृष्टि प्रकरण, संस्कारों पर विचार, पञ्चमहायज्ञ, श्राद्धतर्पण, पिण्डदान, दानधर्म, मूर्तिपूजा, मांस के खाने पर विचार, वर्ण जन्म से या कर्मों से, कर्मफल और मुक्ति पर विचार करके सारगर्भित शब्दों में भावों को समझाने का प्रयास किया है। हर व्यक्ति मनु के सिद्धान्तों को हृदयङ्गम कर सकता है। सार-सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय। हमें गहनता से अध्ययन कर मानव धर्म को समझना है। लेखक का प्रयास उत्तम है। जागरूक पाठक अमूल्य सामग्री को ग्रहण करें एवं जीवन को उत्तम बनाएँ। जीवन की सफलता इसी में है।

- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर, राज.।

ज्योतिष – परिचय शिविर

आर्यजगत् के प्रसिद्ध ज्योतिष-विद्वान्, श्री मोहन कृति आर्ष पत्रक (पंचांग) के निर्देशक-रचयिता श्री दार्शनेय लोकेश जी, नोयडा ने ऋषि उद्यान, अजमेर में शुद्ध ज्योतिष-परिचय का प्रशिक्षण देने के लिए चार दिन का समय प्रदान किया है। वे २५ से २८ जून २०१६ तक प्रशिक्षण प्रदान करेंगे व ज्योतिष सम्बन्धी शंकाओं-समस्याओं का भी समाधान करेंगे। इसमें डेढ़-डेढ़ घण्टे की दो कक्षाएँ प्रातः ९.३० से ११ व दोपहर २ से ३.३० तक होगी। प्रातः-सायं यज्ञ-प्रवचन यथावत् चलते रहेंगे।

इस शिविर में भाग लेने के इच्छुक प्रबुद्ध आर्यजन व ज्योतिष में रुचि रखने वाले महानुभव सम्पर्क कर सकते हैं। सूचना व स्वीकृति प्राप्त सज्जन ही इसमें भाग ले सकेंगे। संख्या सीमित रखी गई है। **सम्पर्क- आचार्य सत्यजित्, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.) दूरभाष- ०९४१४००६९६१ (रात्रि- ८.३० से ९.३०)**

मेरी अमेरिका यात्रा

– डॉ. धर्मवीर

मेरा विदेश जाने का यह तीसरा प्रसंग था। प्रथम यात्रा १९८४ में सिंगापुर की थी, दूसरी यात्रा श्री देवनारायण आर्य के निमन्त्रण पर हॉलैण्ड की थी। उसका विवरण **'मेरी हॉलैण्ड यात्रा'** की डायरी के रूप में परोपकारी में प्रकाशित हुआ था। अमेरिका यात्रा का जिनको पता था, उन मित्रों का आग्रह था– मैं यात्रा विवरण अवश्य लिखूँ। इस लेखन का प्रमुख लाभ यह होता है कि पाठकों को अन्य देशों में आर्यसमाज की चल रही गतिविधियों का ज्ञान होता है, साथ ही सभा के कार्यकलाप एवं प्रगति से परिचय भी हो जाता है। मेरी इस अमेरिका यात्रा का कार्यक्रम बहुत आकस्मिक रूप से बना। बैंगलोर के डॉ. सतीश शर्मा निष्ठावान्, कर्मठ, सिद्धान्तप्रिय आर्य हैं। उनका परिचय हमारी बेटी सुयशा के कारण हुआ। दोनों की भेंट आर्य समाज के सत्संग में होती थी। सुयशा ने डॉ. सतीश शर्मा से मेरी वार्ता कराई। डॉक्टर जी अजमेर ऋषि मेले के अवसर पर पधारे, वेद गोष्ठी में अपने विचार रखे, तब से उनका मुझसे भातृवत् स्नेह है।

डॉक्टर जी की बड़ी बेटी गार्गी, जो ऑक्लाहोमा में चिकित्सा में स्नातकोत्तर का अध्ययन कर रही है, उसका विवाह ऑक्लाहोमा में डॉ. कौस्तुभ से निश्चित हुआ था। उस निमित्त डॉक्टर सतीश जी ने अपने जन्म स्थान मथुरा में, बैंगलोर में तथा अक्लाहोमा में कार्यक्रम निश्चित किया।

इसी विवाह के प्रसंग में डॉक्टर जी ने इच्छा व्यक्त की और कहा– भाई साहेब! गार्गी की और मेरी भी इच्छा है कि आप अमेरिका चलें और विवाह संस्कार का कार्यक्रम सम्पन्न करायें। आप अमेरिकन वीजा के लिये आवेदन कर दें। मेरा विचार है, आपको सरलता से वीजा मिल जायेगा, क्योंकि आपकी पुत्री अमेरिका में रहती है।

इस विचार के बाद मैंने पुत्री सुयशा आर्य और प्रिय भास्कर से चर्चा की। दोनों ने सब कार्यों की औपचारिकता शीघ्र ही पूर्ण कर दी और दूतावास में चार–पाँच फरवरी २०१६ को साक्षात्कार का समय मिल गया। मैंने दिल्ली पहुँचकर डॉ. राजवीर शास्त्री के साथ प्रथम दिन नेहरू प्लेस पहुँचकर प्राथमिक कार्यवाही पूर्ण की और अगले दिन चाणक्यपुरी स्थित अमेरिकी दूतावास में जाकर साक्षात्कार दिया। सुयशा ने साक्षात्कार की बहुत तैयारी कराई थी। यथाक्रम दो मिनट में साक्षात्कार पूर्ण हो गया। अधिकारी ने पूछा– आपके बच्चे कहाँ काम करते हैं, कब जायेंगे और सहज उत्तर दिया– आपका वीजा हो गया और पासपोर्ट रख लिया और इसके साथ ही अमेरिका की यात्रा भी निश्चित हो गई। डॉ. शर्मा जी को सूचित किया तो उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई।

इस विवाह के प्रसंग में डॉ. शर्मा जी ने ६ मार्च २०१६ को मथुरा में तथा ८ मार्च को बैंगलोर में विवाह पूर्व कार्यक्रम रखा था। विवाह ११ मार्च २०१६ को ऑक्लाहोमा में होना निश्चित था।

मथुरा में कार्यक्रम सम्पूर्ण वैदिक रीति से हो, उसमें बड़े व्यक्तियों के रूप में आर्य समाज के अधिक–से–अधिक विद्वान् सम्मिलित हों, उनका आशीर्वादात्मक प्रवचन हो, ऐसी डॉक्टर जी की भावना थी। इसके लिये डॉ. सतीश जी ने मुझे व ज्योत्स्ना (मेरी धर्मपत्नी) को आमन्त्रित किया। उनका आग्रह था, मैं कुछ विद्वानों के नाम दूँ और उनसे मथुरा के कार्यक्रम में पहुँचने का आग्रह करूँ। उनकी इच्छा के अनुसार मैंने प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, डॉ. वेदपाल, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, आचार्य सत्यजित् जी आदि का नाम सुझाया था। डॉ. सतीश शर्मा ने सबको साग्रह निमन्त्रित भी किया। इनमें से आचार्य सत्यजित् जी और प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी, श्री आनन्द प्रकाश जी, श्री धरणे जी, श्री म्हेत्रे जी ने इस कार्यक्रम में उपस्थित होकर सौ.कां. गार्गी और पूरे शर्मा परिवार को आशीर्वाद प्रदान किया।

मथुरा का कार्यक्रम समाप्त कर प्रो. जिज्ञासु जी, ज्योत्स्ना तथा मैं दिल्ली लौट आये। मेरी यात्रा का प्रारम्भ दिल्ली से ९ मार्च २०१६ को था। सायंकाल पाँच बजे ज्योत्स्ना मुझे इन्दिरा गाँधी हवाई अड्डे पर पहुँचा गई।

यात्रा में उथल–पुथल न हो, कठिनाई न हो, वह भी

क्या यात्रा? बस मेरी यह यात्रा असली यात्रा हो गई। पहली सूचना आई- दुबई जाने वाला वायुयान दो घण्टे देरी से जायेगा। विलम्ब के कारण दुबई से डैलस जाने वाले विमान में मुझे डॉक्टर शर्मा जी के साथ जाना था। बैंगलोर से विमान कुछ विलम्ब से चला, परन्तु हमारे विमान से पहले पहुँच गया और प्रतीक्षा करने पर भी हमारा विमान दुबई नहीं पहुँचा तो वह विमान प्रस्थान कर गया।

भारत से बाहर जाते ही मेरा दूरभाष बन्द हो गया। सम्पर्क करना सम्भव नहीं हुआ। रात्रि ढाई बजे वहाँ के समय अनुसार हमारा यान दुबई पहुँचा। अब इधर से उधर, उधर से इधर भटकना प्रारम्भ किया। भाषा की कठिनाई, अपरिचित स्थान, कभी ऊपर-कभी नीचे, कभी इस पंक्ति में, कभी उस पंक्ति में, सवेरे छः बजे खिड़की तक पहुँचा, तो उस समय कोई यान नहीं था। बाद में सूचना मिली- ह्यूस्टन होकर डैलस जाने वाला विमान ९ बजे प्रस्थान करेगा, वही ठीक है। टिकट लेकर प्रतीक्षा करता रहा। यहाँ शाकाहारी भोजन में कुछ था नहीं, जो कुछ साथ रख छोड़ा था, उसी से काम चला लिया। ९ बजे फिर विमान में सवार हुआ। निरन्तर तेरह घण्टे की यात्रा कर ह्यूस्टन पहुँचा। वहाँ दिन के तीन बज रहे थे। विदेश प्रवेश की औपचारिकता और सामान खोजने में दो घण्टे से भी अधिक समय लगा। अगली उड़ान पकड़ने के लिये द्वार तक गया तो पता लगा- विमान तो जा चुका है। फिर अधिकारी से सम्पर्क किया, वह एक हिन्दी भाषी सहृदय महिला थी। उसने बताया- वह मुझे दो टिकट देगी, पहला सात बजे की उड़ान का, उसमें स्थान न मिले तो नौ बजे की उड़ान का। हवाई अड्डा बहुत बड़ा था, एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिये रेलगाड़ी की व्यवस्था थी। पहले सात बजे के लिये गया, स्थान नहीं था। फिर नौ बजे की प्रतीक्षा की। इस बीच में एक युवक नागपुर से श्री जोशी मुझे धोती-कुर्ते में देखकर मुस्कुराया तो मैंने उससे बात की और उसके दूरभाष की सहायता से सुयशा से सम्पर्क किया। वह सम्पर्क न हो पाने से बहुत चिन्तित थी। बात करके शान्ति हुई। उसने डॉ. शर्मा जी को भी सूचित कर दिया। मैं नौ बजे चलकर दस बजे डैलस पहुँचा। बाहर शीत था। हवाई अड्डे से बाहर प्रतीक्षा में एक अपरिचित महिला यात्री बैठी थी। उससे मैंने दूरभाष की सहायता माँगी, तो उसने मुझे देखकर कहा- विदेश के लिये फोन नहीं दूँगी। मैंने कहा- अमेरिका में ही करना है, तब उसने सुयशा से मेरी बात करा दी। डॉ. शर्मा जी को सूचना मिलते ही उनके मित्र श्री वर्मा जी और उनकी डॉ. पुत्री मुझे लेने हवाई अड्डे पर आये थे। उन्होंने मुझे खोज लिया और मेरे संकट का अन्त हो गया।

डॉ. वर्मा जी डॉ. शर्मा जी के मित्र हैं। इस विवाह के अवसर पर अधिकांश मित्र मण्डल शर्मा जी के रोगियों का है और जैसे जो पहले उनके मित्र बने, बाद में उनके रोगी बन गये। मैंने शर्मा जी से पूछा- आपके सब मित्र आपके रोगी ही हैं, तो वे कहने लगे- ये सब पहले मेरे रोगी बनकर आये थे, ये ही आज मित्र और सहयोगी हैं। डॉ. वर्मा और डॉ. सिंह परस्पर समाधि हैं और इनके पुत्र राजीव डैलस में रहते हैं तथा राजीव इञ्जीनियर हैं और बेटी डॉक्टर है। रात्रि में वर्मा जी के घर पर ही ठहरा। फिर ११ मार्च को प्रातः पाँच बजे घर से अपनी गाड़ियों से ओक्लाहोमा के लिये निकले और ग्याहर बजे होटल पहुँच गये। डॉ. शर्मा जी प्रतीक्षा कर रहे थे। सबसे मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई।

होटल में मुझे बैंगलोर के होटल व्यवसायी श्री चन्द्रशेखर राजू जी के साथ तीन दिन रहने का अवसर मिला। वे वेद और यज्ञ में बहुत निष्ठा रखते हैं। बैंगलोर में डॉ. सतीश शर्मा, श्री चन्द्रशेखर जी मिलकर यज्ञ पर अनुसन्धान करने में लगे हुए हैं।

स्नानादि से निवृत्त होकर सभी एक बजे विवाह स्थल पर पहुँचे। यहाँ का विशाल भवन गुजराती समाज का है। किराये पर लिया गया था। टेबल-कुर्सी लगाने से लेकर साजसज्जा तक, शेष सभी लोगों ने मिलकर कर लीं। यहाँ कर्मचारी बहुत महँगे होते हैं, उनसे काम सम्भव भी नहीं होता। घरेलू काम हो या सामाजिक, सभी काम स्वयं करने होते हैं। हॉल में कुछ लोगों ने पहले पहुँचकर व्यवस्था की, फिर जलपान कर संस्कार का कार्य प्रारम्भ किया। संस्कार की सारी सामग्री डॉ. शर्मा जी भारत से लेकर आये थे। संस्कार दो भागों में किया गया। संस्कार की सामान्य विधियाँ पहले कर ली गईं, फिर जो वर-वधू के मित्र अमेरिकन

लोग थे, वे कार्यालय से साढ़े पाँच बजे के बाद पहुँचे, उनके लिये सब व्यवस्थाएँ पाणिग्रहण, लाजाहोम, सप्तपदी की प्रक्रिया बाद में की गई। मैंने विधिभाग सम्पन्न कराया, सबकी अंग्रेजी में व्याख्या डॉक्टर शर्मा जी ने की। यहाँ के लोगों को वैदिक विधि से संस्कार कैसे होता है, बताना तथा उसका महत्त्व समझाना, इस कार्यक्रम का उद्देश्य था। डॉक्टर शर्मा जी की तीनों पुत्रियाँ सुपठित हैं। श्रीमती गार्गी, जिसका संस्कार सम्पन्न किया, वह एम.बी.बी.एस कर स्नातकोत्तर का अध्ययन ओक्लाहोमा विश्वविद्यालय से कर रही हैं। उसके पति डॉ. कौस्तुभ न्यूक्लियर मेडिसिन में पीएच.डी. करके कार्यरत हैं। डॉ. शर्मा जी की दूसरी बेटी शिकागो में एवियेशन में अध्ययन कर रही है। तीसरी बेटी भारत में एम.बी.बी.एस. कर रही है।

संस्कार का कार्य सम्पन्न होने के पश्चात् भोजन हुआ, फिर नृत्य, संगीत का कार्यक्रम करके ११ बजे कार्यक्रम सम्पूर्ण हुआ। फिर सबने मिलकर सब सामान यथास्थान पहुँचाकर हॉल खाली कर दिया। वह कार्य सम्पन्न हो गया था, जिसके निमित्त से अमेरिका आना हुआ। आकर होटल में विश्राम किया।

१२ मार्च प्रातः सभी अतिथि धीरे-धीरे विदा हो रहे थे। समय मिलने पर श्री चन्द्रशेखर राजू से वेद के प्रचार-प्रसार पर बातें हुईं, उन्होंने अपने द्वारा किये जाने वाले कार्यों की जानकारी दी। जिनको प्रस्थान करना था, उनको विदाकर शेष लोगों का ओक्लाहोमा के दर्शनीय स्थल की यात्रा का विचार बना। सब मिलकर ओक्लाहोमा के काऊब्वाय संग्रहालय में गये। अंग्रेजों के अमेरिका में आने से पहले, यहाँ रहने वाले लोग जिनको रेड इण्डियन्स कहा जाता है, उनके जीवन व सामाजिक व्यवस्था को बताने वाला संग्रहालय है। धीरे-धीरे यहाँ के लोगों को मार दिया गया और अंग्रेजों ने यहाँ अपना राज्य स्थापित किया। शासन की प्रारम्भिक व्यवस्थाओं का भी यहाँ आकृति बनाकर प्रदर्शन किया गया है। संग्रहालय बड़ा और दर्शनीय है। वहाँ से गार्गी के घर पर भोजन करके होटल पर लौटकर विश्राम किया।

१३ मार्च अगले दिन प्रातराश करके निकले। आज के दिन गार्गी ने अपना विश्वविद्यालय दिखाया। रोगी बच्चों के लिये नया भवन बना है, जो किसी बड़े होटल जितना और उतना ही सुन्दर बना है। विश्वविद्यालय का पुस्तकालय देखा, वह भी विशाल है। यहाँ लोग पुस्तकालय का भरपूर उपयोग करते हैं। रात्रि को भट्टाचार्य जी के परिवार ने सबको भोजन पर आमन्त्रित किया, वहाँ सब भोजन पर गये। वहाँ से लौटकर होटल पर विश्राम किया।

१४ मार्च को होटल से निकल कर चन्द्रशेखर राजू को हवाई अड्डे पर विदा करने गये। आज का दिन मिलने में बीता। शर्मा जी के साथ निकलकर नगर का भ्रमण किया। सायं डॉ. शाह के घर सब भोजन पर आमन्त्रित थे। भोजन करके होटल में विश्राम किया।

१५ मार्च को प्रातः भ्रमण करते हुए प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन किया। आज तेज हवा चल रही थी। ओक्लाहोमा-अमेरिका का सूखा प्रदेश है। अन्य प्रान्तों की तुलना में बहुत हरा-भरा नहीं है। गर्मी भी भारत की भाँति बहुत अधिक होती है। इसे अमेरिका में पिछड़ा प्रदेश माना जाता है। आज लौटने का कार्यक्रम था। डॉ. गार्गी पाँच बजे चिकित्सालय से लौटीं। बड़ी गाड़ी नहीं मिल सकी, अतः कौस्तुभ के माता-पिता ओक्लाहोमा में रहे। बाकी लोगों ने डैलस के लिये प्रस्थान किया। रात्रि को दस बजे डैलस पहुँचे। भोजन करके शर्मा जी के आग्रह पर पूरे परिवार के साथ एक घण्टा धार्मिक चर्चा हुई, प्रश्नोत्तर हुए। यहाँ हम राजीव जी के यहाँ ठहरे। राजीव जी इञ्जीनियर हैं। राजीव जी के श्वसुर डॉ. वर्मा तथा पिता श्रीचन्द जी दोनों पुराने सहपाठी और मित्र हैं। दोनों केन्या में रहते हैं। दोनों डॉक्टर जी के मित्र हैं। विवाह के लिये केन्या से यहाँ आये हुए थे। रात्रि विश्राम किया।

१६ मार्च प्रातः शीघ्र उठकर प्रस्थान की तैयारी की, इतनी शीघ्रता में राजीव जी की पत्नी और गार्गी ने मिलकर भोजन तैयार करके साथ रख दिया। कौस्तुभ, राजीव जी, शर्मा जी, सब बस अड्डे तक छोड़ने आये। बस अड्डे के पास पहुँचकर राजीव जी ने हम सब को वह स्थान दिखाया, जहाँ अमेरिकी राष्ट्रपति कैनेडी को गोली मारी गई थी। जिस घर से गोली मारी गई तथा जिस स्थान पर गोली लगी, सड़क पर गोली लगने के स्थान पर सफेद चिह्न बनाये गये हैं तथा जहाँ से गोली मारी गई थी, भवन की

उस मंजिल को संग्रहालय बनाया गया है। बस यथासमय चली। दोनों ओर खेत-जंगल के दृश्य थे, साफ चौड़ी सड़क पर चलते हुए ११ बजे ह्यूस्टन पहुँच गया। श्री मुनीश गुलाटी जी बीमार होने पर भी अपनी पत्नी के साथ बस अड्डे पर पहुँचे, उन्हें ज्वर था। उनके साथ मार्ग में उनकी बेटी प्रिया, जो चिकित्सा विज्ञान में पढ़ती है, उसका भी एक सप्ताह का अवकाश था, उसको लेकर हम सब घर पहुँचे। गुलाटी जी का परिवार पुराना आर्य परिवार है। शुद्ध शाकाहारी है, विश्वविद्यालय में मांस बनता है, अत: उनकी बेटी वहाँ भोजन नहीं करतीं। पीने के पानी के नल के नीचे मांस धोया जाता है, अत: पानी की बोतलें भी घर से लेकर जाती हैं। यह है संस्कार का प्रभाव। भोजन के बाद विश्राम कर गुलाटी परिवार के साथ आर्य समाज ह्यूस्टन पहुँचा। प्रथम पं. सूर्यकुमार नन्द जी से भेंट हुई। उन्हें मैं गुरुकुल गौतमनगर से जानता हूँ। आर्य समाज मन्दिर विशाल तथा सुन्दर है। अमेरिका में यह सबसे समर्थ समाज माना जाता है। यहाँ के दूसरे विद्वान् डॉ. हरिश्चन्द्र हैं, वे और उनकी पत्नी कविता जी से भी पुराना परिचय है। वे अनेक बार अजमेर आते रहे हैं। यहाँ निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ७ बजे से ८ बजे तक प्रवचन तथा आधा घण्टा प्रश्नोत्तर हुए। आज के व्याख्यान का विषय था- 'ईश्वर का सच्चा स्वरूप'। व्याख्यान के पश्चात् भोजन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। गुलाटी जी के साथ घर विश्राम किया।

१७ मार्च को प्रात: समाचार देखे। लेखन कार्य किया। दिन में डॉ. हरिश्चन्द्र जी तथा कविता जी भेंट के लिये पधारे, उनसे आर्य समाज के प्रचार-प्रसार की चर्चा होती रही। सायंकाल आर्य समाज गये। आज का विषय था- 'आर्य समाज का प्रचार-प्रसार कैसे हो?' उसके पश्चात् प्रश्नोत्तर हुए, भोजन करके घर लौटे।

१८ मार्च को प्रात:काल का समय स्वाध्याय चर्चा में व्यतीत हुआ। दोपहर डॉ. हरिश्चन्द्र जी व कविता जी पधारे, उनके साथ मार्ग में मुनीष जी के भाई प्रवीण जी से मिलते हुए श्री जसवीर सिंह जी के घर पहुँचे। ये फरीदाबाद के पास गाँव दयापुर के निवासी हैं। आपके भाई वेदपाल जी ऋषि उद्यान के साधना शिविर में भाग ले चुके हैं। वर्षों से अमेरिका में निवास कर रहे हैं। निष्ठावान् आर्यसमाजी हैं। घर में प्रतिदिन यज्ञ करते हैं। आज सायं इनके घर पर यज्ञ किया और फिर आर्य समाज पहुँचे, आज का विषय 'वैदिक वाङ्मय का महत्त्व' था। उसी प्रकार शंका-समाधान हुआ, भोजन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आज अजमेर में ज्योत्स्ना के साथ अध्ययन करने वाली श्रीमती उषा जी अपने पति के साथ कार्यक्रम में आईं। चर्चा कर समाचार जाने, पुराना परिचय फिर नया हुआ। आप भारतीय वाणिज्य दूतावास (कॉन्स्युलेट) में कार्यरत हैं, आपके पति इञ्जीनियर हैं। आज रात्रि को जसवीरसिंह जी के घर पर ही निवास रहा।

१९ मार्च को प्रात:काल आर्य समाज में जसवीरसिंह जी की ओर से गायत्री यज्ञ का आयोजन रखा गया था। आठ बजे से प्रथम ओम् संकीर्तन, गायत्री यज्ञ तथा गायत्री मन्त्र का अर्थ कर प्रवचन किया। इसके बाद जलपान कर शनिवार होने के कारण प्रवचन का कार्यक्रम भी यज्ञ के साथ ही रखा गया था। आज 'उपासना का महत्त्व' पर व्याख्यान दिया, शंका समाधान हुआ। भोजन करके जसवीर सिंह जी घर जाते हुए श्रीमती उषा जी के घर पर रुके, कुशलक्षेम की चर्चा हुई, वहाँ से घर पहुँचकर विश्राम किया। सायं जसवीर जी की बेटी, जो विश्वविद्यालय में चिकित्सा विज्ञान की छात्रा है, जिसके अवकाश समाप्त हो रहे थे, उसे छात्रावास तक पहुँचाकर आये। विश्वविद्यालय बहुत भव्य बना हुआ है, घर लौटकर रात्रि विश्राम किया।

शेष भाग अगले अंक में.....

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम–**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम–**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन–जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए 'आस्था–भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग–यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था–भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था–भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद–प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था–भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था–भजन' (चैनल) डिश–टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा–स्काई, वीडियोकोन, बिग–टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार–बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक–धर्म के प्रचार–प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

छः वैदिक दर्शनों का मतैक्य है

- आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

पिछले अंक का शेष भागं.....

एक झगड़ा पूर्वपक्षी लोग यहाँ पर उत्पत्ति की प्रक्रिया पर खड़ा करते हैं। उनका कथन है कि वेदान्त में विवर्त्तवाद सांख्य में परिणामवाद और न्याय-वैशेषिक में आरम्भकवाद है, परन्तु यह झगड़ा व्यर्थ का है और नवीनों द्वारा कल्पित किया गया है। विवर्त्तवाद सृष्टि रचना का कोई प्रकार ही नहीं है। जगत् के मिथ्यात्व को सिद्ध करने के लिए यह वाद खड़ा किया गया है, जिस प्रकार रस्सी में सर्प का विवर्त्त है, परन्तु इस वाद वालों को ज्ञात होना चाहिए कि इस वाद में कार्य-कारण का नियम बनता ही नहीं। कार्य-कारण का नियम यह है कि कारण-गुणपूर्वक कार्यगुण होते हैं और कार्य का अपने कारण में लय होता है। सर्वत्र उपादान की प्रक्रिया में ऐसा ही पाया जावेगा, परन्तु विवर्त्त में यह नहीं बनता। रस्सी के स्थान में सर्प बैठा देना अथवा किसी दूसरी वस्तु के स्थान में अन्य वस्तु बैठाना-यह सृष्टि की रचना नहीं है। जगत् के जिस मिथ्यात्व को सिद्ध करने के लिए यह वाद खड़ा किया गया है,वह भी इससे सिद्ध नहीं होता। न तो रस्सी भ्रम एवं मिथ्या है और न उसमें जो प्रतीत हो रहा है, वह मिथ्या। जब ब्रह्म के ज्ञान में इनका अस्तित्व बना है और हर कल्प में ये ऐसे ही प्रकट होते हैं तो मिथ्या किस प्रकार हैं?

रह जाते हैं आरम्भक और परिणामवाद। इनमें वस्तुतः कोई भेद नहीं है। दही जब जमता है, तब चाहे हम यह कह दें कि दूध में दही का परिणाम हुआ अथवा यह कह दें कि विकार प्राप्त दुग्धगत परमाणुओं में से दही का आरम्भ हुआ। दोनों एक ही बात है। घी के पिघलने और जमने में भी चाहें हम आरम्भ मानें या परिणाम, बात दोनों एक-सी ही हैं। रबड़ के टुकड़े को खींचने पर वह बड़ा हो जाता है। हम यह भी कह सकते हैं कि रबड़ के परमाणुओं ने इतने बड़े रबड़ का आरम्भ कर दिया अथवा यह भी कह सकते हैं कि रबड़ के टुकड़े में छिपे हुए इस बड़े आकार का उसने परिणाम कर दिया। वस्तुतः दोनों में एक ही बात पायी जाती है। कोई भेद नहीं। इस दृष्टि से भी दर्शनों में समन्वय ही है।

तीसरे प्रकार से समन्वय की सरणि यह है कि दर्शनशास्त्र के कुछ मुख्य प्रतिपाद्य विषय हैं। उन विषयों में छः दर्शनों का परस्पर कोई विरोध है ही नहीं। नीचे की तालिका इस विषय पर अच्छा प्रकाश डालती है-

१- वेद की स्वतः प्रमाणता और उससे ही दर्शन विज्ञान की प्रेरणा का होना स्वयं सिद्ध है।

२- वेदों के अध्यात्मिक और धर्म सम्बंधी विचारों पर तार्किक गवेषणा सब में पायी जाती है।

३- सभी दर्शन संशयवाद और भ्रमवाद तथा अभाव का निराकरण करके तत्त्वात्मक अस्तित्व को स्वीकार करते हैं तथा सृष्टि में एक सामंजस्य मानते हैं एवं इसका अन्तिम उद्देश्य भी स्वीकार करते हैं।

४- मीमांसा में प्रत्यक्ष इसका वर्णन नहीं है, परन्तु शेष सभी दर्शन जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय और सृष्टि प्रवाह की अनादिता को स्वीकार करते हैं।

५- निःश्रेयस एवं मोक्ष को सभी मानते हैं।

६- भाव से भाव की उत्पत्ति तथा प्रकृति एवं परमाणु के रूप में जगत् के उपादान कारण को स्वीकार करते हैं।

७- आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व को सभी ने माना है।

८- संख्या में अन्तर भले ही हो, परन्तु प्रमाण को सभी स्वीकार करते हैं।

९- जीवात्मा अपने कर्मानुसार फल को भोगता है, भिन्न-भिन्न जन्मों को धारण करता है-आदि में सभी का ऐकमत्य है।

१०- इन्द्रियों के विषय में सभी एक-सा विचार रखते हैं।

११- जीव और ईश्वर का भेद तथा जीव अनेक हैं- यह लगभग सभी को स्वीकार है।

१२- पाप और पुण्य के विषय के विचार परस्पर एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं।

इस प्रकार छः दर्शनों का परस्पर समन्वय पाया जाता

है। चतुर्थ सरणि जो आचार्य दयानन्द के अनुसार दर्शनों के परस्पर समन्वय की है, वह है–सृष्टि रचना के छः कारणों को लेकर। यह वस्तुतः सर्वोत्तम सरणि है। सृष्टि की रचना में कर्म का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है, बिना कर्म के सृष्टि का बनना ही सम्भव नहीं। मीमांसा में ऋषि का कथन है कि ऋग्वेद के दसवें मण्डल १३० वें सूक्त में वस्त्र के द्वारा सृष्टि प्रक्रिया का वर्णन है। वहाँ पर सृष्टि रूपी वस्त्र को १०१ कर्मों से बनाया गया वर्णित किया है, साथ ही एक मन्त्र में यह स्पष्ट किया गया है कि इस सृष्टि रूपी यज्ञ के साथ देव ऋषि=सप्त दिव्य तत्त्व अपने जानने के योग्य तद्रूप प्रतिष्ठित ज्ञान से युक्त, छांदन एवं विस्तारक शक्ति से युक्त, और प्रमा=मान यथार्थ वस्तु रूप, जाति, आकृति, विशेष आदि भावों से युक्त हुए प्रकट होते हैं और पूर्व कल्प में बर्ते गये सृष्टि रचना के मार्ग पर चलते हुए आगे सृष्टि के कार्यों को अपने में परिणत हुआ प्राप्त करते[१६] हैं। मन्त्र का यह सारा भाव यज्ञ में भी अर्थान्तर करने पर घटेगा। यहाँ पर इनके दिखलाने का इतना ही तात्पर्य है कि यज्ञ विस्तार के द्वारा सृष्टि रचना के विस्तार का भी परिज्ञान होता है, अतः मीमांसा में जो यज्ञों की व्याख्या की गई है, उससे सृष्टिरूपी यज्ञ की प्रक्रिया का भी निष्कर्ष निकाला जा सकता है। मीमांसा दर्शन में धर्म का प्रतिपादन है। वेद का सृष्टिगत पदार्थों के साथ औत्पत्तिक सम्बन्ध[१७] है, अतः वेद ही इस धर्म के विषय में स्वतः प्रमाण है। धर्म दो प्रकार का होता है– पदार्थ धर्म एवं कर्ममय धर्म। पदार्थ धर्म का विशेष रूप से प्रतिपादन वैशेषिक आदि शास्त्रों में पाया जाता है, परन्तु कर्ममय धर्म का प्रतिपादन विशेषतया मीमांसा में किया गया है। कर्म का स्वेच्छापूर्व होना और अनिच्छापूर्व होना भी पाया जाता है। अनिच्छा–पूर्वक होने वाले कर्म केवल शरीर आदि की रक्षा के लिए हैं, अतः उन्हें करने की आवश्यकता नहीं। मीमांसा में इसका वर्णन नहीं किया गया है। स्वेच्छापूर्वक होने वाले कर्म इच्छा के साथ किये जाते हैं। इनमें विधि–निषेध होता है, साथ ही कर्त्ता, कर्म और क्रिया इस तीनों के समन्वय से होता है। मनुष्य द्वारा जिन यज्ञों के करने का विधान है, वे यज्ञ सृष्टि में एक अन्य ही प्रकार से चल रहे हैं। समस्त सृष्टि भी एक यज्ञ है। मनुष्य परमात्मा की सृष्टि में चलने वाले यज्ञों की अनुकृति कर अपने यज्ञों का विस्तार करता है, उसके यजति=यज्ञ, कर्म का सम्बन्ध, देवता, द्रव्य, त्याग, क्रिया और उद्देश्य से युक्त है, साथ ही इसमें राग लगा है, अतः उससे संस्कार एवं अदृष्ट उत्पन्न होते हैं और उनका फल होता है। अदृष्ट की स्थिति दो प्रकार की है, एक प्रकार यह है कि कर्म से उत्पन्न संस्कारों से वासना बनती है, जो अदृष्ट कहलाती है। उसी के अनुसार फल होता है। दूसरा प्रकार अदृष्ट का वह है जो निमित्त कारण की प्रक्रिया से पदार्थों में क्रिया–प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है अथवा पदार्थ का अपना स्वाभाविक कर्म है। सूई को जब चुम्बक आकृष्ट करता है, तब इस आकर्षण को अदृष्ट कहा जाता। जल का अधोगमन और अग्नि का ऊर्ध्वगमन कर्म है। यह पदार्थ धर्म का कर्म, अतः कभी ये कर्म दिखलाई पड़ते हैं और कभी नहीं दिखलाई पड़ते हैं। विधिनिषेधात्मक यज्ञ कर्म से उत्पन्न अदृष्ट का फल होता है, परन्तु सृष्टि के निमित्त कारण परमेश्वर के द्वारा किये गये सृष्टि यज्ञ के कर्म सृष्टिगत पदार्थों में क्रिया–प्रतिक्रिया रूप अदृष्ट को उत्पन्न करते हुए भी पुरुष कर्म के अदृष्ट से होने वाले फल को नहीं लेते, क्योंकि उसमें राग नहीं है और कर्त्ता स्वयं आप्तकाम है। सृष्टि–यज्ञ में होने वाले इस कर्म से क्रिया–प्रतिक्रिया, संयोग–विभाग, विश्लेषण–संश्लेषण आदि होते हैं। इससे जगत् सदा गतिमान् रहता है। इसका नाम भी जगत् है, जो चलने वाला है। यह गति कर्त्ता की है और उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के कर्म करती हुई प्रवाहित हो रही है। मीमांसा के यज्ञों के सम्बन्धी कर्म के अध्ययन से इस कर्म का संकेत मिलता है, अतः ऋषि का यह कहना कि मीमांसा सृष्टि के कर्म रूप कारण की व्याख्या करता है, सुतराम ठीक है। मीमांसा के प्रतिपाद्य विषय धर्म का वेद से प्रतिपादित होना और वेद के पदों का सृष्टि के पदार्थों के साथ औत्पत्तिक सम्बन्ध स्थापित करना इस उद्देश्य की ही पूर्ति करते हैं।

महर्षि ने वैशेषिक में सृष्टि के दूसरे कारण काल की व्याख्या का होना लिखा है। वैशेषिक को देखने पर उसमें छः पदार्थों का प्रतिपादन मिलता है। फिर यह काल मुख्य प्रतिपादन का विषय है–यह कैसे सिद्ध हुआ? वैशेषिक की आन्तरिक परीक्षा करने पर महर्षि का यह कथन सर्वथा

ही सिद्ध कोटि में आवेगा। महर्षि के अतिरिक्त भी लोग वैशेषिक को कालवादी मानते थे। जैनियों के ग्रन्थ सुन्दर विलास के आत्मानुभव के १७ वें अंग में भी ऐसा वर्णन पाया जाता है कि वैशेषिक कालवादी[१८] है।

वैशेषिक कर्मवादी दर्शन है। यह पदार्थ धर्म और कर्त्तव्य-धर्म दोनों का ही वर्णन करता है, परन्तु पदार्थ धर्म का इसमें विशेष वर्णन है। द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय में द्रव्य, गुण और कर्म सत्तात्मक पदार्थों से सम्बन्ध रखते हैं, ये तत्त्वात्मक हैं, परन्तु सामान्य, विशेष और समवाय केवल सम्बन्ध (Relations) हैं। ये सम्बधातिरिक्त कोई वस्तु नहीं है, परन्तु सम्बन्ध का प्रतिपादन बिना वस्तु सत्ता के सम्भव नहीं, अत: वस्तु के साथ इसका प्रमाणीकरण वैशेषिक में किया गया है। द्रव्यों का वर्णन करते हुए भी पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा और मन को परिगणित किया गया है। यहाँ भी काल और दिशा को द्रव्य मानकर वैशेषिक ने अपनी विशेषता का प्रतिपादन किया है। वैशेषिक नाम ही विशेष को पदार्थ मानने से हुआ, अत: विशेष उसका मुख्य विषय है। ये सामान्य, विशेष और समवाय बुद्धि की अपेक्षा रखते[१९]हैं। जब तक अपेक्षा बुद्धि न पायी जावे, इनकी प्रतीति होती नहीं। यह अपेक्षा बुद्धि भी तभी पायी जा सकती है और इनका परिज्ञान हो सकता है, तब दिशा और काल का खेल वस्तु पर अपना प्रभाव रखता हो। दिशा केवल मूर्त्त पदार्थों पर अपना प्रभाव रखती है, किन्तु काल अमूर्त्त अर्थात् बौद्ध प्रत्ययों पर भी अपना प्रभाव रखता है। दिशा का प्रभाव मूर्त्तता से मालूम हो जाता है और काल का प्रभाव पदार्थ की जन्यता से ज्ञात होता है, क्योंकि यह जन्य पदार्थों का जनक है। द्रव्य, गुण, कर्म और सामान्य आदि सम्बन्ध जब एक क्रम विशेष (एक आर्डर) में होते हैं, तभी इनको हम जान सकते हैं। यह स्थिति और क्रम विशेषकाल के अन्दर होता है, अत: काल एक मुख्य कारण है वैशेषिक प्रक्रिया का। विशेष प्रतीति भी कार्य द्रव में होती है और वह भी काल की अपेक्षा रखती है। वैशेषिक की काल सम्बन्धी यह परिभाषा ''नित्यों में न हो[२०] और अनित्यों में पाया जावे अत: काल कारण है'' इस विषय पर पर्याप्त प्रकाश डालती है। काल जन्य मात्र का कारण है और विशैषिक प्रक्रिया में इसका मुख्य स्थान है।

महर्षि सृष्टि के महत्त्वपूर्ण कारण उपादान कारण की व्याख्या न्याय में मानते हैं। न्याय दर्शन में वस्तुत: १६ पदार्थों का वर्णन है, परन्तु विश्लेषण करने पर ये सभी प्रमाण और प्रमेय में ही संगृहीत हो जाते हैं। तर्क-विद्या के वर्णन की दृष्टि से इनका पृथक्-पृथक् वर्णन है। प्रमाण का विषय प्रमेय है जो प्रमाणों से सिद्ध होता है। शरीर, इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि, मन, प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव, फल, दु:ख और अपवर्ग प्रमेय है। इनमें से कुछ वास्तविक तत्त्व हैं और कुछ संयोगी अथवा क्रियाजन्य धर्म हैं। आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि और मन आदि भूतात्मक हैं। मन उसी प्रकार भूतात्मक नहीं, जिस प्रकार इन्द्रिय आदि हैं। इन भूतात्मकों का मूल कारण परमाणु है। वैशेषिक की भाँति न्याय शास्त्र के अनुसार अवयवी एक पदार्थ, जो कि प्रत्येक कार्य द्रव्य में विद्यमान है। एकत्व प्रतीति और आकर्षण, धारण आदि उसकी वजह से है। यही प्रतीति का भी विषय है। कार्य द्रव्य केवल परमाणु समूह ही नहीं है। परमाणुओं के समूह में अवयवी एक विशेष पदार्थ जो कारण के बहुत्व और कारण के महत्त्व के प्रचय विशेष से उत्पन्न है। यह अवयवी न अभाव है और न मिथ्या ही है। अवयवी पदार्थ का अत्यन्त अपवर्ग=विभाग करते समय जहाँ पर अवयव धारा की समाप्ति होती है, वही परमाणु है। परमाणु अवयव तो हैं, परन्तु वे अवयवी नहीं। फिर यह अवयव कार्यद्रव्यों में किस प्रकार आता है, न्याय में इसका विशेष विचार है। अवयवी परमाणुओं का प्रारम्भ होने से कार्य वस्तुओं में होता है। इसका कारण उपादानता का नियम है। निमित्त कारण कार्य को बनाता तो है, परन्तु उसकी सत्ता, गुण आदि कार्य में नहीं आते हैं। उपादान का यह नियम है कि उसके गुण कार्य में आते हैं, अत: कार्यगत अवयवी उपादान-नियम के कारण से कार्य में आता है। यही कारण है कि बिना उपादान के कोई भी कार्य बन नहीं सकता है। न्याय दर्शन में परमाणु की सिद्धि में अवयवी का अपकर्षण करते हुए अन्तिम अपकृष्ट अवयव को परमाणु कहते हैं-यह वर्णन उपादान के नियम का प्रत्यायक है। वस्तुत: यह उसका एक प्रधान विषय है।

योग में पुरुषार्थ की व्याख्या है। पुरुष का प्रयोजन ही पुरुषार्थ है। वह लौकिक और कैवल्य भेद से दो प्रकार का है। यह पुरुषार्थ ज्ञान, विद्या और विचार के बिना नहीं सिद्ध होता है। संसार में प्रकृति के तीनों गुण परमात्मा की निमित्तता से प्रवृत्त होकर विविध दृश्यों को उत्पन्न करते हैं, परन्तु प्रकृति के गुणों का इस प्रकार दृश्य में प्रवृत्त होने का कारण क्या है? इसका उत्तर है कि पुरुषों के प्रयोजन ही कारण हैं। सृष्टि रचना के उद्देश्य में पुरुष का प्रयोजन छिपा है। जब यह प्रयोजन पूरा हो जाएगा, तब प्रधान की प्रवृत्ति पुरुष के लिए नहीं होती है। सृष्टि करने का प्रयोजन पुरुष के कर्मों का फल देना और कैवल्य की प्राप्ति[२१] है। परम पुरुष परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव की सफलता का प्रकाश भी इसी से होता है। इस प्रकार पुरुषार्थ सृष्टि का प्रयोजन है और योगशास्त्र में मुख्य रूप से इसका व्याख्यान है।

सांख्य शास्त्र तत्त्वों के परिगणन और मेल की व्याख्या करता है। रचना का कार्य संयोग और विभाग के बिना नहीं हो सकता है। कहीं पर तत्त्वों का संयोग करना पड़ता है, कहीं पर वियोग। विश्लेषण और संश्लेषण की प्रक्रिया रचना का एक मुख्य अंग है। कोई भी विश्लेषण तब तक ठीक नहीं माना जा सकता, जब तक यह संश्लेषण पर ठीक न उतर जावे। इस प्रक्रिया में तत्त्वों के मेल के अतिरिक्त अनुक्रम (Order) को कारण से प्रारम्भ करके अन्तिम कार्य तक क्रमशः विचार किया जाता है और कार्य से कारण की ओर चलते हुए विचार किया जाता है। सांख्य में तत्त्वों का अनुक्रम परिगणन करते हुए यही प्रक्रिया वर्ती गई है। सांख्य में सबसे बड़ा विस्तार गुणों का है। सत्व, रजस् और तमस् के विचित्र सम्मिलन से सृष्टि की सारी विचित्रता है। गुणों का सम्मिलन एक मात्र प्रधान विषय है जो सांख्य में प्रतिपादित किया गया है। राग गुणों और विराग पुरुष के योग का नाम सृष्टि है। इस प्रकार यह सुतराम् ठीक ही है कि सांख्य में तत्त्वों के मेल का ही मुख्यता प्रतिपादन है।

वेदान्त में जगत् के मुख्य निमित्तकारण जगत्कर्त्ता ब्रह्म का प्रतिपादन है। यह बहुत ही स्पष्ट बात है। वेदान्त के प्रथम चार सूत्र ही इस तथ्य को प्रतिज्ञा रूप में प्रकट करते हैं। वेदान्तदर्शन में यह स्पष्ट प्रतिपादित है कि ब्रह्म के बिना जगत् की उत्पत्ति नहीं हो सकती है। वेदान्त जहाँ ब्रह्म को जगत् का कर्त्ता, धर्त्ता और हर्त्ता बतलाता है, वहाँ ज्ञान का भी कारण उसी को बतलाना है। कोई भी उपादान कारण जो स्वभावतः जड़ है, उसमें निमित्त कारण चेतन ब्रह्म के बिना क्रिया नहीं उत्पन्न हो सकती। बिना क्रिया और ज्ञान के प्रकृति, परमाणु आदि उपादान कारण जगत् का उत्पादन नहीं कर सकते। स्वभाव की भी कारणता का वेदान्त में खण्डन है, क्योंकि जड़ वस्तु में बनने और बिगड़ने का दो विरोधी स्वभाव अपने आप नहीं हो सकता है। यदि स्वभाव नियन्त्रित रहे तो फिर जिसके नियन्त्रण में है, उसे निमित्त कारण ब्रह्म कहा जाता है। यदि नियन्त्रित नहीं है तो सदा बनना अथवा बिगड़ना बना ही रहेगा और साथ ही दो विरोधी स्वभावों का संघर्ष होने से कुछ भी बनना-बिगड़ना असम्भव हो जावेगा। ब्रह्म की ज्ञानमयी क्रिया से प्रकृति का सृष्टि रूप में परिणाम होता है। इस प्रकार वेदान्त ब्रह्म की व्याख्या करता है।

छः दर्शनों में सृष्टि के छः कारणों की व्याख्या की गई है। इसी आधार पर छः दर्शनों का परस्पर समन्वय है। यही महर्षि का दृष्टिकोण है।

संदर्भ -

१. लघ्वादिधर्मैः साधर्म्यं च गुणानाम्। सां-१/१२८

२. सहिसर्ववित् सर्वकर्त्ता

३. समाधिसुषुप्तिमोक्षेषु ब्रह्मरूपता। सां. ५/११६

४. प्रधानशक्ति योगाच्चेत् संगापत्ति सत्ता मात्राच्चेत् सर्वैश्वार्यम्, प्रमाणाभावान्न तत्सिद्धि। सम्बन्धाभावान्नानुमानम् श्रुतिरपि प्रधानकार्यत्वस्य सां. ५/८

५. संख्यैकान्तासिद्धिः कारणानुपपत्युपपत्तिभ्याम्। न्या. ४/१/४१

६. आद्यहेतुता तद्द्वारा पारम्पर्येप्यणुवत्। सां १/७४। पारम्पर्येऽपि प्रधानानुवृत्तिरणुवत् गतियोगेप्याद्यकारण ताहानिरणुवत्। सां. ६/३५,३७

७. द्वयी चेयं नित्यता कूटस्थनित्यता परिणामिनित्यता च तत्र कूटस्थनित्यता पुरुषस्य परिणामिनित्यता गुणानाम्। यस्मिन् परिणम्यमाने तत्त्वं न विहन्यते तन्नित्यम् यो. भा. ४/३३। ऐसा ही महाभाष्य में भी है।

८. न चालिंगात्परं सूक्ष्ममस्ति नन्वस्ति पुरुषः सूक्ष्म इति, सत्यं यथा लिंगात् परम लिंगस्य सौक्ष्म्यं न चैंव पुरुषस्य किन्तु लिंगस्य अन्वयिशयं व्याख्यातम्। यो. १/४५

९. अन्तर्वहिश्च कार्यद्रव्यस्ये त्यादि। न्या. ४/२/२०

१०. न भूतप्रकृतित्वमिन्द्रयाणा माहेकारिकत्व श्रुतेः। सां. ५/८४

११. ईक्षतेर्नाशब्दम् ११ वें. १/१/५/ रचनानुपयत्तेश्चनानुमानम्। वे. २२/१/ महद्दीर्घवद्वा ह्रस्वपरिमण्डलाभ्याम् ११वें २/२/११,१३,१४

१२. एतेन योगः प्रत्युक्तः। वे. २/१/३

१३. एतेन शिष्टाः परिग्रहा अपि व्याख्याताः। वे. २/१/१२

१४. सांख्य ०१/६१

१५. त्रयाणामेव चैवमुपन्यासः प्रश्नश्च। वे. ३१/६

१६.यो यज्ञो विश्वतन्तुभिस्ततः एकशतं देवकर्मेभिरायतः। सहस्तोमाः सहछन्दस आवृताः सहप्रभा ऋषयः सप्तदैव्याः। पूर्वेषां पन्थामनुदृश्य धीरा अन्वालेभिरे रथ्यो न रश्मीन्।। ऋ. १०/१३०/१

१७. ओत्पत्तिकवस्तु शब्दस्यार्थेन सम्बन्धस्तस्यज्ञानमुपदेशोऽद्रव्यतिरेक श्चार्थेऽनुपलब्धे तत्प्रमाणं वादरायणस्यानपेक्षत्वात्। मी. ११५

१८. वैशेषिक प्रतिकालवादी है। प्रसिद्ध सुन्दरविलास आत्मानुभव, अंग-१७

१९. सामान्य इति बुद्ध्यपेक्ष्यम्। वे. १/२/३

२०. नित्येष्वभावादनित्येषु भावात् कारणे कालाख्येति। वै. २/२/९

२१. भोगापवर्गार्थ दृश्यम्। यो. १/१८। पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः कैवल्यम्। यो. २/९

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३१ मई २०१६ तक)

१. श्री शान्तिस्वरूप गोयल, लुधियाना,पंजाब २. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर ३. श्री योगेन्द्र आर्य, पानीपत, हरियाणा ४. श्री रमेश आर्य, अजमेर ५. श्री श्यामसुन्दर झँवर, ब्यावर, राज. ६. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर ७. श्री अशोक पंसारी व श्रीमती अंजना पंसारी, अजमेर ८. श्री बाबू भाई निचात भाई, साबरकाँठा, गुजरात ९. श्री श्याम सिंह व श्रीमती किरण, अजमेर १०. श्रीमती रेनू सिंह, भरतपुर, राज. ११. डॉ. दिनेश शर्मा व श्रीमती पुष्पा शर्मा, अजमेर १२. श्रीमती ममता व श्री अरविन्द अवस्थी, जोधपुर, राज. १३. श्रीमती पद्मा व मनोज शर्मा, जयपुर, राज. १४. श्री गौरव शर्मा, गुडगाँव, हरियाणा १५. श्री गौरव मिश्रा, अजमेर १६. श्री बाबू राव मैत्रेय व श्रीमती उषा मैत्रेय, हैदराबाद, तेलंगाना १७. श्रीमती प्रेमवती आर्य, अजमेर १८. अत्यादेव, सौरभ, आशुतोष पारीक, अजमेर १९. श्री मुरलीधर छापेरवाल व श्री बालमुकन्द छापेरवाल, अजमेर २०. श्री उदयवीर, गाजियाबाद, उ.प्र. २१. श्री आनन्द मुनि, हिसार, हरियाणा २२. मास्टर अगस्त्या, अजमेर २३. श्री बलवीर सिंह बत्रा, नई दिल्ली २४. श्री दयानन्द वर्मा, गुलाबपुरा, राज. २५. श्री नसीब, हिसार, हरियाणा २६. श्रीमती किरण सेठी, दिल्ली २७. श्री रमेश कुमार मलिक, दिल्ली २८. चरणजीत लाल दिल्ली २९. श्री सुरेश कुमार, दिल्ली ३०. श्री सूरजभान आर्य, दिल्ली। **– परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३१ मई २०१६ तक)

१. श्री शान्तिस्वरूप गोयल, लुधियाना, पंजाब २. श्री हरिसिंह वासनवाल, अजमेर ३. श्री सतीश राठी, सहारनपुर, उ.प्र. ४. श्री कालुराम/स्व. श्री रनधीर सिंह, सहारनपुर, उ.प्र. ५. श्री सोहन सिंह, सहारनपुर उ.प्र. ६. श्री मधुसुदन, सहारनपुर, उ.प्र. ७. श्रीमती रेनु देवी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड़ ८. श्री राघव, हरिद्वार, उत्तराखण्ड़ ९.श्री पेहल सिंह, सहारनपुर, उ.प्र. १०. श्री सुधीर कुमार गुप्ता, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ ११. श्री सौमित्रा कुमार गुप्ता, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ १२. श्रीमती निर्मला देवी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ १३. श्रीमती सीमा गुप्ता, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ १४. श्रीमती प्रेमलता गुप्ता, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ १५. श्रीमती कान्ता, अजमेर १६. श्री पितृ देवता-स्व. श्री भगवानसहाय, अजमेर १७. श्री अवनीश बंसल, नई दिल्ली १८. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर १९. श्रीमती पुष्पा देवी, ब्यावर, राज. २०. श्री नरेश कुमार गुप्ता, कोलकाता, पं. बंगाल २१. श्रीमती अरुणा पारीक, अजमेर २२. श्री हेमन्त कुमार गुप्ता, अजमेर २३. श्रीमती ओमवती पारीक, अजमेर २४. श्री मनीष सोमानी, अजमेर २५. श्रीमती यशोदा आर्या, अजमेर २६. श्रीमती तरुणा गहलोता, अजमेर २७. डॉ. दिनेश शर्मा व श्रीमती पुष्पा शर्मा, अजमेर २८. श्री नवीन मिश्रा, अजमेर २९. श्री रामचन्द्र गुप्ता, सीतापुर, उ.प्र. ३०. श्रीमती सुनीता पारीक, अजमेर ३१. श्री गोपाल कृष्ण व श्री रामरतन छपेरवाल, अजमेर ३२. श्री अनुराग शर्मा, अजमेर ३३. श्रीमती हेमलता वर्मा, अजमेर ३४. श्री अभिषेक शुक्ल, अजमेर ३५. श्रीमती भँवरी देवी, अजमेर ३६. श्री विजय सिंह जादऊ, अजमेर ३७. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर ३८. श्री बलवीर सिंह बत्रा, नई दिल्ली ३९. श्रीमती ऋतु माथुर, अजमेर ४०. श्री ब्रह्मानन्द आश्रम, कुरुक्षेत्र ४१. मास्टर अथर्व, दिल्ली ४२. मास्टर आयुष, दिल्ली ४३. स्व. श्री वेदप्रकाश पारवानी, अहमदाबाद, गुजरात ४४. श्री बाबूलाल वर्मा, अजमेर ४५. श्री पूनाराम, बीकानेर, राज. ४६. शीतल पँवार, पुणे, महाराष्ट्र। ४७. श्री कश्मीरीलाल सिंघल, गिदबाह, पंजाब ४८. श्री राजेश त्यागी, अजमेर। **– परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

वानप्रस्थ आश्रम के दानदाता

१. श्री अजय गर्ग, हनुमानगढ, राज. २. श्री लाभ चन्द आर्य हनुमानगढ, राज. ३. श्री आनन्द मोहन, हनुमानगढ, राज. ४. श्री रविन्द्रपाल आर्य, हनुमानगढ,राज. ५. श्री मनसाराम महेन्द्र आर्य धर्मार्थ न्यास, भ्रमासर ६. आर्यसमाज सरदारशहर, चुरु, राज. ७. श्री भँवरलाल सैनी, चुरु, राज. ८. श्री श्यामसुन्दर तँवर, चुरु, राज. ९. श्री ओमदास स्वामी, चुरु, राज. १०. श्री रामचन्द्र, चुरु, राज. ११. आर्यसमाज, कुचामन, राज. १२. श्री मुन्नालाल व श्रीमती सुशीला भूतड़ा, अलवर, राज. १३. श्री शिवलाल, अजमेर १४. श्री रामावतार नागर, अजमेर १५. श्रीमती रतन कँवर लाखोटिया, अजमेर १६. श्रीमती चम्पा देवी, अजमेर १७. श्री सुरेश मालू, अजमेर १८. श्री भूपेन्द्र मालेवर, अजमेर १९. श्रीमती रतनदेवी, अजमेर २०. श्री ओमप्रकाश बाहेती, अजमेर २१. श्री पन्नालाल गैना, जेठाना २२. श्री नारायण आर्य, जेठाना २३. श्री श्यामसिंह, अजमेर २४. श्री रमेशचन्द मूंदडा, अजमेर २५. श्री शिवरतन पालोद, अजमेर २६. श्री रामलाल जनावा, जेठाना २७. श्री जयकिशन ईनाणी, अजमेर २८.श्री रामस्वरूप उन्नावी, अजमेर २९. श्री हरिनिवास मूलचन्द ईनाणी, अजमेर ३०. आर्यसमाज, कडैल, अजमेर ३१. श्री हरिप्रकाश सोनी, अजमेर ३२. श्री ओमप्रकाश ईनाणी, अजमेर ३३. श्री कृष्ण कुमार छपेरवाल, अजमेर ३४. श्री गोविन्द कुमार शर्मा, अजमेर ३५. श्री कैलाशचन्द मढाणा, अजमेर ३६. श्री सुरेश माहेश्वरी, अजमेर ३७. श्री हरस्वरूप काबरा, अजमेर ३८. ड्रीम मार्बल्स, अजमेर ३९. श्री घनश्याम काबरा, अजमेर ४०. श्री लक्ष्मीनारायण मालू, अजमेर ४१. श्री उम्मेदराम काबरा, अजमेर ४२. श्री रामस्वरूप कुमावत, अजमेर ४३. श्री रामेश्वरलाल सोनी, अजमेर ४४. श्री मुरलीधर राठी, अजमेर ४५. श्री विष्णुगोपाल सोमानी, अजमेर ४६. मै. राजपूताना म्यूजिक हाउस, अजमेर ४७. श्री कृष्णगोपाल शर्मा, अजमेर ४८. श्री योगेश शर्मा, अजमेर ४९. श्री रूपचन्द सोनी, अजमेर ५०. श्री ऋषिदत्त, अजमेर ५१. श्री रमेश बंसल, भीलवाड़ा, राज. ५२. श्री बालमुकन्द व श्री किशन नवाल, भीलवाड़ा, राज. ५३. श्री विक्रम पृथ्वीराज अंजाना, निम्बाहेडा ५४. श्री मनोहरलाल भराडिया, चित्तौड़, राज. ५५. श्री मोहनलाल आर्य, निम्बाहेड़ा ५६. श्री प्रकाश आर्य, निम्बाहेड़ा ५७. श्री अरविन्द कुमार निम्बाहेड़ा ५८. श्री घीसालाल पाटीदार, छोटी सादड़ी ५९. श्री विनोद पारीक, छोटी सादड़ी ६०. श्री बाबूलाल व हीरालाल पाटीदार, छोटी सादड़ी ६१. श्री किशनलाल आंजना, प्रतापगढ़, राज. ६२. श्री रामबिलास काछरमल साहू, छोटी सादड़ी ६३. श्री श्याम अग्रवाल, छोटी सादड़ी ६४. माँगीलाल प्रजापत, प्रतापगढ़, राज. ६५. श्री भूरालाल प्रजापति, प्रतापगढ़, राज. ६६. श्री अम्बालाल शर्मा, प्रतापगढ़, राज. ६७. श्री मनोहर पारीक, छोटी सादड़ी ६८. श्री लालाराम पारीक, प्रतापगढ़, राज. ६९. श्री साहू आशाराम, छोटी सादड़ी ७०. श्री मोदीराम आर्य, जीवनपुरा ७१. श्री घनश्याम छोटी सादड़ी ७२. श्री मुन्नालाल जीवनपुरा ७३. श्री गुलाबचन्द, जीवनपुरा ७४. श्री सुरेश चन्द गुजराती, छोटी सादड़ी ७५. श्री ओमप्रकाश आंजना, छोटी सादड़ी ७६. श्री वरदीशंकर शर्मा, छोटी सादड़ी ७७. श्री गोपाल लाल राधेश्याम, छोटी सादड़ी ७८. शान्ति लाल शर्मा, छोटी सादड़ी ७९. श्री आशाराम, छोटी सादड़ी ८०. श्री उदयलाल चौहान, छोटी सादड़ी ८१. श्री माँगीलाल व्यास, छोटी सादड़ी ८२. श्री भोपराज साहू, छोटी सादड़ी ८३. श्री कालूराम आंजना, छोटी सादड़ी ८४. श्री उदयलाल पहलवान, छोटी सादड़ी ८५. श्री ताराचन्द, छोटी सादड़ी ८६. श्री राधेश्याम किशनलाल, छोटी सादड़ी ८७. श्री जगदीश आर्य, छोटी सादड़ी ८८. रॉयल एकेडमी स्कूल, छोटी सादड़ी ८९. मै. आंजना सेल्स एजेन्सी, छोटी सादड़ी ९०. श्री कमलाशंकर, छोटी सादड़ी ९१. श्री चाँदमल साहू, छोटी सादड़ी ९२. श्री घीसालाल पाटीदार आर्य, छोटी सादड़ी ९३. डॉ. रमेश पाटीदार, छोटी सादड़ी ९४. श्री जगदीश आंजना, छोटी सादड़ी ९५. श्री राजेन्द्र छपेरवाल, अजमेर ९६. श्री पुरषोत्तम बम्ब, अजमेर ९७. श्री महेशचन्द, अजमेर ९८. श्री बाबूलाल, प्रतापगढ़, राज.। ९९. श्री माणकचन्द्र माहेश्वरी, अजमेर।

जब तक मनुष्य सुख-दुःख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते, इस से मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें। -**महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४०**

जिज्ञासा समाधान - ११३

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा- निम्नलिखित जिज्ञासाओं का समाधान करने का कष्ट करें:-

१. हमें मनुष्य बनना चाहिए या देव बनने का प्रयास करना चाहिए?

मनुष्य बनेंगे तो ''शतपथ'' वाली बात बाधा डालती है, जिन्हें यज्ञ करने तक का अधिकार नहीं है। जब महर्षि दयानन्द द्वारा अनेक स्थलों पर दी गई ''मनुष्य'' की परिभाषा में सभी श्रेष्ठ गुण आ जाते हैं, तो फिर देव बनने की क्या आवश्यकता रह जाएगी और इस तरह मन्त्र में ''मनुर्भव'' वाली बात का औचित्य भी सिद्ध हो जाएगा।

२. यज्ञ करते समय ''**विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत**'' वाला मन्त्र अग्न्यानयन मन्त्र, दीप प्रज्वलन मन्त्र और अग्न्याधान मन्त्र के पश्चात् आता है। इससे भी पहले ''ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना, स्वस्तिवाचनम् व शान्तिकरणम्'' के मन्त्र आ चुके होते हैं, तो ''**विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत**'' वाला मन्त्र सर्वप्रथम क्यों नहीं आ जाता? इसमें क्या अनियमितता हो जाती है? जब इतना कुछ हो लेता है और अग्नि प्रज्वलित हो जाती है, तब कहा जाता है कि अब सभी देव और यजमान बैठ जाएँ। तो क्या इससे पहले वाली सभी क्रियाएँ खड़े-खड़े करनी चाहिए? या सीदत का कोई अन्य अर्थ भी हो सकता है, जिसका हमें पता नहीं है। और यह भी हो सकता है कि अब तक पूरे एकाग्रचित्त नहीं हुए थे (वैसे होना तो चाहिए।), इसलिए चेताने के लिए कहा हो कि अब सावधान, सतर्क व सजग होकर बैठें। मामला क्या है? समझाने का कष्ट करें।

३. जो मन्त्र ''**विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत**'' है, इसमें यजमान अलग से कहने की आवश्यकता क्या है? यह तो ठीक है कि यजमान के बिना यज्ञ कैसे होगा और उसका यज्ञ में विशेष महत्त्व भी है, परन्तु जब देव ही यज्ञ करने का अधिकार रखते हैं, मनुष्यों को यज्ञ करने का अधिकार ही नहीं है, फिर विश्वेदेवा में यजमान स्वत: ही आ जाता है। उसके लिए अलग से यजमान भी बैठ जाएँ-कहने का प्रयोजन क्या है? समझ नहीं आता है। हम तो यही सुनते थे कि शूद्रों को यज्ञ करने का अधिकार नहीं है। हम साधारण व्यक्ति तो यही समझे हैं कि उक्त मन्त्र में केवल सभी देव और यजमान के लिए बैठने का ही निर्देश नहीं है, बल्कि जलाई गई अग्नि को और अधिक प्रज्वलित करने के बारे में भी कहा गया होगा और इससे अन्य भी कोई महत्त्वपूर्ण बात है, इसलिए इस मन्त्र का क्रम इसी स्थान पर आता होगा, परन्तु सभी देवों और यजमान को इतने समय बाद बैठने का निर्देश देना समझ नहीं आता। यहाँ ''सीदत'' का कुछ अन्य भी अर्थ होगा। कृपया, समझाने का कष्ट करें।

-इन्द्रसिंह, पूर्व एस.डी.एम., २९, नई अनाजमण्डी,भिवानी, हरियाणा। ९४१६०५७८१३

समाधान-(क) वेद व ऋषियों के तात्पर्य को समझने के लिये वेद व ऋषियों की शैली को ही अपनाना पड़ता है। इस आर्ष शैली को अपनाकर जब हम वेद और ऋषि वाक्यों को देखते हैं, तब वे वाक्य हमें स्पष्ट समझ में आते चले जाते हैं। महर्षि दयानन्द ने वक्ता अथवा लेखक का भाव, उद्देश्य समझने के लिए सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में चार बातें-आकांक्षा, योग्यता, आसत्ति और तात्पर्य को जानने के लिए कहा है। प्राय: जब हम भाषा-शैली वा भाषा-विज्ञान को नहीं जान रहे होते, तब हम किसी बात के अर्थ को ठीक से नहीं जान पाते।

महर्षि दयानन्द ने मनुष्य की परिभाषा अनेक स्थानों पर दी है। वे परिभाषाएँ अपने-अपने स्थान पर उचित हैं। महर्षि मनुष्य के अन्दर जो मनुष्यता के भाव होने चाहिए उनको लेकर परिभाषित कर रहे हैं, जैसे स्वात्मवत्, सुख-दु:ख में वर्तना, विचार पूर्वक कार्य करना आदि। यह मनुष्य बनने की प्रेरणा वेद भी 'मनुर्भव' वाक्य से कर रहा है। इसको देखकर आप तो शतपथ के वाक्य को देख रहे हैं और उसमें विरोधाभास दिख रहा है, सो है नहीं। यहाँ जो ''**अनृतं मनुष्या:**'' कहा है, वह एक सामान्य कथन है। इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि मनुष्य सदा झूठ ही बोलता है, सत्य बोलता ही नहीं। हाँ, इसका यह तात्पर्य तो अवश्य है कि मनुष्य अपने अज्ञान आदि के कारण झूठ

बोल देता है, जबकि यह भाव देवताओं में नहीं होता, क्योंकि विद्वानों, ज्ञानियों को देवता कहा गया है, **''विद्वांसो वै देवाः''**। विद्वान् ज्ञानी लोगों में अज्ञान स्वार्थ आदि के न होने के कारण वे सत्य बोलते हैं, सत्य का आचरण करते हैं। इसका यह भी तात्पर्य नहीं है कि कभी झूठ बोल ही नहीं सकते, नहीं बोलते। हाँ, देव और मनुष्य कोई अलग नहीं हैं। दोनों में एक ही अन्तर है कि देवों से त्रुटियाँ नहीं होती अथवा यूँ कहें कि अत्यल्प होती हैं। जो होती हैं, वे जीव की अल्पज्ञता के कारण होती हैं और इनसे इतर जो हैं, वे मनुष्य हैं। मनुष्यों से त्रुटियाँ अधिक हो सकती हैं, होने की सम्भावना अधिक रहती हैं।

''अनृतं मनुष्याः'' इस सामान्य कथन को लेकर **''मनुर्भव''** से विरोध देखना उचित नहीं हैं। **''मनुर्भव''** मनुष्यता से युक्त मनुष्य बनने की बात कह रहा है और **''अनृतं मनुष्याः''** कह रहा है कि मनुष्य से अज्ञान के कारण त्रुटि हो सकती है। इन दोनों में कोई विरोध नहीं है, दोनों वाक्य अपने-अपने स्थान पर अपनी बात कह रहे हैं।

हमें मनुष्य बनना चाहिए या देव? तो हमें श्रेष्ठता की ओर बढ़ना चाहिए। मनुष्य बनना कोई हीन बात नहीं है। वेद ने मनुष्य बनने के लिए कहा है और इससे आगे अपने अन्दर देवत्व पैदा करने की बात कही, अर्थात् मनुष्य से आगे हम देव बनें।

आप शतपथ की इस बात को लेकर कह रहे हैं कि ''इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य को यज्ञ करने का अधिकार नहीं है।''

शतपथ के इस पूरे प्रसंग से कहीं भी ऐसी बात प्रतीत नहीं हो रही कि मनुष्य को यज्ञ से दूर रखा जा रहा हो और देवताओं के लिए यज्ञ करने का विधान हो। यहाँ तो केवल सामान्य परिभाषा की जा रही है कि जो असत्य बोल देता है (किन्हीं कारणों से) वह मनुष्य और जो सत्य बोलता है, देवता होता है। यहाँ मनुष्यों के यज्ञ न करने की बात कहाँ से आ गई? अपितु शास्त्र में यह कथन तो मिलता है- **''मनुष्याणां वारम्भसामर्थ्यात्।।''** का. श्रौ. पू. १.४ अर्थात् यज्ञ-याग आदि कर्म करने का अधिकर मनुष्यों का है, मनुष्य इस कार्य के लिए समर्थ हैं। इस शास्त्र वचन में मनुष्य ही यज्ञ का अधिकारी है और आप इसके विपरीत देख रहे हैं जो कि है ही नहीं।

अभी हमने पीछे कहा कि मनुष्य बनना कोई हीन काम नहीं है,मनुष्य बनना एक श्रेष्ठ स्थिति है। जिस स्थिति को महर्षि दयानन्द परिभाषित करते हैं, वहाँ यहाँ वाली स्थिति नहीं है। महर्षि की मनुष्य वाली परिभाषा में धर्म का बाहुल्य है, विचार का बाहुल्य है। किन्तु देव मनुष्यों से आगे धर्म और विचार का बाहुल्य रखते हुए विवेक विद्या का बाहुल्य भी रखते हैं, वे राग-द्वेष से ऊपर उठे हुए होते हैं। यह सब होते हुए देव बनने की आवश्यकता है, इसलिए वेद ने कहा **'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।'** इस आधार पर मनुष्य और देव दोनों बनने का औचित्य है।

(ख) आपके इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले यहाँ जिस मन्त्र को आपने उठाया है, उसका अर्थ महर्षि दयानन्द ने जो किया है, वह दे रहे हैं-

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते सं सृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

- य. १५.५४

पदार्थ- हे (अग्ने) अच्छी विद्या से प्रकाशित स्त्री वा पुरुष तू (उद्बुध्यस्व) अच्छे प्रकार ज्ञान को प्राप्त हो, सब के प्रति, (प्रति जागृहि) अविद्यारूप निद्रा को छोड़ के विद्या से चेतन हो (त्वम्) तू स्त्री (च) और (अयम्) यह पुरुष दोनों (अस्मिन्) इस वर्तमान (सधस्थे) एक स्थान में और (उत्तरस्मिन्) आगामी समय में सदा (इष्टापूर्त्ते) इष्ट सुख विद्वानों का सत्कार, ईश्वर का आराधन, अच्छा संग करना और सत्यविद्या आदि का दान देना। यह इष्ट और पूर्णबल ब्रह्मचर्य, विद्या की शोभा, पूर्ण युवा अवस्था, साधन और उपसाधन-यह सब पूर्त्त इन दोनों को (सं, सृजेथाम्) सिद्ध किया करो (विश्वे) सब (देवाः) विद्वान् लोग (च) और (यजमानः) यज्ञ करने वाले पुरुष, तू इस एक स्थान में (अधि, सीदत) उन्नतिपूर्वक स्थिर होओ।

इस मन्त्र के अर्थ में महर्षि ने कहा कि विद्वान् लोग और यज्ञ करने वाला पुरुष-ये दोनों इस स्थान अर्थात् यज्ञ कर्म करने के स्थान पर वा परोपकार रूप कर्म में उन्नतिपूर्वक स्थिर हों। महर्षि ने यहाँ स्थिर होने की बात कही है, बैठने आदि का संकेत नहीं किया। स्थिर होने का तात्पर्य अपने को अन्य कार्यों से हटाकर उस परोपकार रूप कार्य में

स्थिर करना, उसी में अपने को लगाना है। महर्षि के वचनों से तो यह मामला ऐसे ही सुलझा हुआ है। हम अपने अल्प ज्ञान से सुलझे हुए को भी कभी-कभार उलझा लेते हैं।

(ग) इस तीसरे बिन्दु में भी आपकी वही समस्या है कि मनुष्यों को यज्ञ करने का अधिकार ही नहीं है, आपने यह बात कहाँ से कैसे निकाल डाली, ज्ञात नहीं हो रहा। जिस प्रकरण को लेकर आप यह बात कह रहे हैं, उस प्रकरण वा किसी अन्य स्थल से आप पहले यह प्रमाण दें कि मनुष्य यज्ञ करने का अधिकारी नहीं है। हाँ, इसके विपरीत मनुष्यों द्वारा यज्ञ करने के प्रमाण तो ऋषियों के अनेकत्र मिल जायेंगे। आप फिर उस बात को दोहरा रहे हैं कि देव ही यज्ञ करने के अधिकारी हैं, इस बात की भी सिद्धि नहीं होगी कि केवल देव ही यज्ञ कर सकते हैं।

अर्थात् मनुष्य यज्ञ करने का अधिकारी है, यह बात ऊपर शास्त्र से सिद्ध है। महर्षि दयानन्द लिखते हैं- ''प्रत्येक मनुष्य को सोलह-सोलह आहुति-और छः छः माशे घृतादि एक-एक आहुति का परिमाण न्यून से न्यून चाहिए।'' स.प्र. ३। यहाँ महर्षि ने मनुष्य लिखा है और अन्यत्र भी मनुष्यों द्वारा यज्ञ विधान है, इसलिए मन्त्र में ''**विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत**'' दोनों को पढ़ा गया है। यजमान और सब देवों के स्थिर होने का प्रयोजन है। केवल देव अर्थात् विद्वान् अथवा केवल यजमान (मनुष्य) ही नहीं, अपितु ये दोनों उस यज्ञ रूपी श्रेष्ठ कर्म में स्थिर हों। इन दोनों को कहने रूप प्रयोजन से मन्त्र में दोनों को कहा है। अधिक जानने के लिए उपरोक्त महर्षि के अर्थ को देखें।

अन्त में आपसे निवेदन है कि इस प्रकार के प्रश्न प्रकरण को ठीक से समझने पर अपने-आप सुलझ जाते हैं। शतपथ में किस प्रकरण को लेकर कहा है और वेद का क्या प्रसंग है, यदि हम उस प्रकरण, प्रसंग को ठीक से देख लें तो बात उलझेगी नहीं, अपितु सुलझ जायेगी। उलझती तब है, जब हम दो प्रकरणों को मिलाकर देखते हैं। अस्तु। - **ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)**

भारतीय संस्कृति एवं भाषाओं के रक्षार्थ समर्पित हैदराबाद यात्रा: एक अनुभव

- ब्र. सत्यव्रत

ऋग्वेदादि सहित सम्पूर्ण वैदिक आर्ष वाङ्मय ने यह प्रमाणित किया है कि प्राचीन विश्व में आर्य सर्वाधिक प्रतिभाशाली और शौर्यवान् थे। उन्होंने एक महान् संस्कृति को जन्म दिया। जिसकी श्रेष्ठता को प्रायः सभी आधुनिक विद्वान् स्वीकारते हैं। सच्चा ज्ञान सदा एक रस होता है, वह काल के बंधन में नहीं बँधता। अतः वैदिक ज्ञान आज की नवीनता से ही नवीन है। इस ज्ञान की हद में ही सृष्टि की सारी बातें हैं। महाप्राण 'निराला' के शब्दों में- ''जो लोग कहते हैँ कि वैदिक अथवा प्राचीन शिक्षा द्वारा मनुष्य उतना उन्नत्तमना नहीं हो सकता, जितना अंग्रेजी शिक्षा द्वारा होता है, महर्षि दयानन्द इसके प्रत्यक्ष खण्डन हैं।''

संस्कृति के निर्माण में भाषा का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। जब किसी देश की भाषा का ह्रास होता है तो वहाँ की संस्कृति भी प्रभावित होती है, मिट तक जाती है। हमारे सांस्कृतिक जीवन में यहाँ की भाषाओं का विशेष योगदान है। भाषा और संस्कृति का अन्योन्याश्रित संबंध होता है। १८३५ ई. में मैकाले ने अंग्रेजी भाषा के माध्यम से हमारे दश में एक भिन्न संस्कृति को प्रविष्ट कराने का प्रयास किया। इसका उद्देश्य बताते हुये स्वयं मैकाले ने लिखा था-

''.....अंग्रेजी पठित वर्ग रंग से भले ही भारतीय दिखेगा, परन्तु आचार-विचार, रहन-सहन, बोल-चाल और दिल-दिमाग से पूरा अंग्रेज बन जायेगा।'' आजादी की भोरवेला में जब हमारा देश किसी नौनिहाल की तरह लड़खड़ाकर चलने की कोशिश कर रहा था तब भी गुलामी की मानसिकता में पले और दीक्षित हुये हमारे ही कुछ कर्णधारों ने देशभक्तों की भावनाओं का अनादर करते हुये भारतीय भाषाओं को पनपने नहीं दिया और अंग्रेजी को स्वतंत्र भारत में भी 'साम्राज्ञी' बनाये रखा। आज अंग्रेजी माध्यम के प्राइवेट स्कूलों की बाढ़ आई हुई है और ऐसे

स्कूलों में अपने बच्चों को पढ़ाना सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गया है। सैम पित्रोदा के 'ज्ञान आयोग' की सिफारिश ने तो हमारे बच्चों को मातृभाषा से लगभग विमुख ही कर दिया । वे संस्कृत हिन्दी क्षेत्रीय भाषाओं और देवनागरी जैसी वैज्ञानिक लिपि से ही न सिर्फ वंचित हुये अपितु इन भाषाओं में विद्यमान उदात्त सांस्कृतिक मूल्यों व ज्ञान से भी दूर हो गये। आज अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त युवकों में जो नई संस्कृति जन्म ले रही है, वह स्वच्छन्द भोगवादी, पश्चिम की नकल और अपनी जड़ से कटी हुई है अधकचरी अंग्रेजी की नाव पर सवार हमारे भावी नागरिक न इस घाट के हैं, न उस घाट के। ऐसे में हमारी उदात्त सांस्कृतिक अस्मिता और विशिष्ट भारतीय पहचान का क्या होगा?

निश्चित रूप से भारतीय जाति की संस्कृति व जीवन मूल्यों को जीवित रखने के लिये, देश वासियों में अखण्ड राष्ट्रीय भावना को परिपुष्ट करने हेतु आज संस्कृत, हिन्दी को तथा भारतीय संस्कृति की धारा को प्रवाहहीन होने से बचाना होगा। हमारी संस्कृति में जो भी सर्वश्रेष्ठ व चिरन्तन सत्य है, प्राचीन ऋषियों से हमें जो दाय प्राप्त हुआ है उसका लाभ हमारे सभी देशवासी व सारी मानव जाति उठा सके इसके लिये तकनीकी स्तर पर एक सार्थक प्रयास करने की आवश्यकता है। यदि यह सुविधा बन जाय कि बिना अंग्रेजी या अन्य कोई भाषा जाने उस भाषा में लिखित ज्ञान-विज्ञान को मशीनी अनुवाद द्वारा कोई भी पढ़ सके तथा कोई भी अपनी बात का विचार का सम्प्रेषण संगणक (कम्प्यूटर) द्वारा अन्य भाषाओं में कर सके तो फिर अंग्रेजी भाषा सीखने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। साथ ही संस्कृत भाषा में लिखित वेद व आर्ष-वाङ्मय के ज्ञान-विज्ञान को हम अनेक भाषाओं में सुलभ करा सकते हैं, जिसका लाभ लेकर अंग्रेजी पठित हमारी नई पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ जायेगी और उनका यह भ्रम भी दूर हो जायेगा कि हमारे प्राचीन शास्त्रों में कुछ विशेष नहीं है।

इसी परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति व भाषाओं पर आये इस आसन्न संकट के प्रति जागरुकता लाने, इसके समाधान के लिये योजना प्रस्तुत करने, लोगों को इस कार्यक्रम से जोड़ने तथा भाषाई दूरियाँ दूर करने के प्रयत्न करना आवश्यक है। वैज्ञानिक पहले आधारवाली पाणिनीय व्याकरण का उपयोग लेकर और अपने शास्त्रों के महत्त्व को दर्शाने हेतु विचार-मंथन के लिये अन्तर्राष्ट्रीय सूचना तकनीक संस्थान (International Institute of Information Technology-I.I.I.T या ट्रिपल आई.टी.), हैदराबाद में दिनांक ९ मई २०१६ से एक संगोष्ठी (सेमिनार) का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में सहभागिता करने के लिये परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान, अजमेर के वरिष्ठ ब्रह्मचारियों का एक दल आचार्य सत्यजित् जी एवं परोपकारिणी सभा के यशस्वी प्रधान डॉ. धर्मवीर जी के मार्गदर्शन में हैदराबाद के लिये रवाना हुआ। ६ मई २०१६ सायंकाल गुरुकुल से प्रारम्भ हुई यह यात्रा २७ मई प्रातःकाल गुरुकुल में प्रवेश के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस यात्रा का अनुभव अत्यन्त ज्ञानवर्द्धक, हर्ष मिश्रित, रोमांचकारी व स्मरणीय घटनाओं से भरपूर है।

गर्मी के बावजूद लगभग ३१ घंटे की एक ओर की हमारी रेल यात्रा उत्साहपूर्वक पूर्ण हुई। सिकन्दराबाद रेल्वे स्टेशन पर रात्रि में एक बजे पहुँचते ही ट्रिपल आई.टी. के वरिष्ठ प्राध्यापक श्री शत्रुञ्जय जी रावत व उनके सेवाभावी सहयोगी अपनी गाड़ियों में बैठाकर हम सबको संस्थान के बाकुल छात्रावास में लाये जहाँ सुव्यवस्थित कमरों में हमारे रहने की व्यवस्था की गई थी। प्रो. शत्रुञ्जय जी हमारे आचार्य सत्यजित् जी के कनिष्ठ भ्राता हैं, जिनका अत्यन्त प्रेम भरा सहयोग एवं आत्मीयता हमें यात्रा समाप्ति तक मिलता रहा जो हमें सदा स्मरणीय रहेगा।

ट्रिपल आई.टी., हैदराबाद सन् १९९८ में स्थापित, अलाभकारी पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल (Not-for-profit public private partnership-N-PPP model) पर आधारित एक ग्रेड-ए स्वायत्तशासी शोध विश्वविद्यालय है-जो दक्षिण एशिया के छह शीर्ष-शोध विश्वविद्यालयों में एक है। इस संस्था का उद्देश्य शोध परक शिक्षा द्वारा समाज व उद्योग में सकारात्मक परिवर्त्तन लाना, नवाचार को प्रोत्साहित करना और मानवीय मूल्यों को पुनर्स्थापित करना है।

शेष भाग अगले अंक में.....

संस्था - समाचार

१६ से ३१ मई २०१६

यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है और तदनन्तर वेद प्रवचन होता है। रविवार प्रात:काल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी आर्य सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं और अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। अतिथि यज्ञ के होता के रूप में दान देने वाले यजमान यदि ऋषि उद्यान में उपस्थित होते हैं तो उनके जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगाँठ, पुण्य तिथि एवं अन्य अवसरों से संबंधित विशेष मन्त्रों से आहुतियाँ भी दिलवायी जाती हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द जी द्वारा पूना में दिये गये प्रवचन 'उपदेश मञ्जरी' का पाठ एवं व्याख्यान होता है। शनिवार सायंकाल वानप्रस्थी साधक-साधिकाओं द्वारा प्रवचन किया जाता है। प्रत्येक रविवार को सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर व्याकरण, दर्शन, रचना-अनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं।

प्रात:कालीन प्रवचन में हैदराबाद यात्रा के अनुभव सुनाते हुए **डॉ० धर्मवीर जी** ने बताया कि वहाँ आर्ष पाठ विधि से चलने वाले कुछ गुरुकुलों को देखा, जिनमें आचार्य आनन्द प्रकाश जी द्वारा संचालित आर्ष शोध-संस्थान अलीयाबाद, मेड़क जिले में संचालित कन्या गुरुकुल और आचार्य उदयन जी द्वारा संचालित गुरुकुल मुख्य थे। उन गुरुकुलों को देखकर प्रसन्नता हुई कि आज भी उस क्षेत्र में ऋषियों की पद्धति से अष्टाध्यायी, महाभाष्य, श्रौतसूत्र आदि शास्त्र पढ़ाये जा रहे हैं जो कठिन तपस्या का कार्य है। गुरुकुल संचालित होने के कारण आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में पारिवारिक यज्ञ, प्रवचन, संस्कार, उत्सव, गोष्ठी और वेद प्रचार का कार्य भी चल रहा है, उससे बहुत लोग प्रभावित हुए हैं। गुरुकुलों में आर्ष पाठ विधि द्वारा पठन-पाठन से ही शास्त्र जीवित रहता है। कुछ लोग निराश होकर गुरुकुल में भीड़ बढ़ाने, प्रसिद्धि और धन कमाने के लिए आर्ष पाठ विधि के स्थान पर प्रान्तीय या केन्द्रीय सरकार का पाठ्यक्रम शुरू कर गुरुकुल को स्कूल बना देते हैं, यह ठीक नहीं है। वहाँ विद्वानों के साथ बातचीत का मुख्य बिन्दु था-वैदिक विचारधारा का प्रचार कैसे हो? वैदिक धर्म और शिक्षा को अधिक से अधिक लोगों तक कैसे पहुँचाया जाय-इस पर विचार-विमर्श हुआ। हमारे पास दो तरह के वर्ग हैं। पहला-जहाँ कोई सुनने वाला न हों, वहाँ जिज्ञासा उत्पन्न करना। दूसरा जो उच्च शिक्षित लोग हैं, उनको वेद के तार्किक और बौद्धिक श्रेष्ठ ज्ञान से जोड़ना। समाज में बुद्धजीवी वर्ग का विशेष प्रभाव रहता है। बड़े प्रसिद्ध व्यक्ति जिस कार्य को करते हैं, उसी की नकल जन साधारण करता है। उचित-अनुचित का विचार किये बिना खाने-पीने, पढ़ने-लिखने, बोलने, रहने, पहनने आदि में उनका अनुसरण करते हैं। लाखों, करोड़ों में कुछ व्यक्ति ही नकल करने से पहले विचार करते हैं, शेष सब अन्धानुकरण करते रहते हैं।

दैनिक 'आन्ध्र भूमि' समाचार पत्र के सम्पादक श्री एम.वी.आर. शास्त्री से चर्चा हुई। वे ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, वेद और आर्य समाज से बहुत प्रभावित हैं। आर्य समाज के इतिहास और वैदिक साहित्य का उन्होंने गम्भीरतापूर्वक गहन अध्ययन किया है। वे चाहते हैं कि वैदिक शिक्षाओं को जन सामान्य में प्रचारित कर स्थापित किया जाये। उनके धारावाहिक लेख समाचार पत्र में छपते रहते हैं। रिज़र्व बैंक ऑफ इण्डिया के अनुसंधान विभाग के निदेशक डॉ. श्री महेत्रे जी से वार्तालाप हुआ। उनके मन में वेद प्रचार की बहुत तड़प है। वे आधुनिक साधनों से वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, बुद्धजीवियों के बीच में वेद प्रचार करना चाहते हैं। विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय एवं अन्य आधुनिक शिक्षा संस्थानों के बहुत

शिक्षित, तार्किक, मननशील, बुद्धजीवी, शोधकर्ता, समाज का नेतृत्व करने वाले लोगों से निरन्तर सम्पर्क बनाये रखने से प्रचार स्थायी और प्रभावी होता है। पुराने तन्त्र को आधुनिक तन्त्र के साथ मिलाकर नये लोगों में वैदिक विचारधारा को संक्रमित करना होगा। वेद की श्रेष्ठता, श्रेष्ठ लोगों द्वारा ही प्रमाणित हो सकती है। हैदराबाद में ही 'विज्ञान वेदिका' नामक वैदिक अनुसंधान संस्थान के संस्थापक श्री सत्या रेड्डी जी से बातचीत होने पर उन्होंने कहा कि वेदज्ञान और आधुनिक शिक्षा पर तुलनात्मक व्याख्यान होना चाहिये। वे देश के विभिन्न नगरों में इस प्रकार के व्याख्यान देते रहते हैं तथा देश-विदेश के वैज्ञानिकों से निरन्तर सम्पर्क बनाये रखते हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक पी.सी.राव को उन्होंने वैदिक विज्ञान और उसके अनुकूल सांख्य आदि दर्शन शास्त्रों से परिचित करवाया। वेदज्ञान और आधुनिक शिक्षा पर तुलनात्मक शोध निबन्ध लिखकर वे जर्मन विश्वविद्यालय के विद्वानों को भेजते हैं। उन्हें गम्भीरतापूर्वक पढ़कर वहाँ के विद्वान् चिन्तन-मनन करते हैं और आवश्यकता होने पर शंका-समाधान भी करते हैं। वेद प्रचार के लिये भवन और अन्य साधनों की तुलना में ब्राह्मणत्व की आवश्यकता है। जो विचारपूर्वक अपने कार्य करता है, उचित समय पर निर्णय करता है, वही सच्चा ब्राह्मण है, वही समाज का नेतृत्व कर सकता है। इस प्रकार विद्वानों से मिलकर ज्ञानवर्द्धन और आनन्द करते हुए यह यात्रा बहुत प्रेरणादायक और बड़ी सफल रही।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में ऋग्वेद के हिरण्यगर्भ सूक्त की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि इस सूक्त में सृष्टि उत्पत्ति का वर्णन है। जो यह संसार बना हुआ दिखाई दे रहा है, उसको देखकर भूत और भविष्य का अनुमान होता है। कार्य को देखकर कारण का अनुमान होता है। श्वेताश्वतर उपनिषद् इस विषय की व्याख्या करता है। इस संसार का मूल कारण क्या है? हम मनुष्य कहाँ से आ गये? अन्य जड़ पदार्थ कहाँ से आ गये? परमेश्वर बहुत सूक्ष्म है, हमारी पहुँच और पकड़ से दूर है। बड़े-बड़े पर्वत हिमालय आदि उसकी विशालता और गहरे समुद्र उसकी गम्भीरता को बता रहे हैं, दिशायें उसकी भुजा के समान विस्तार को बता रही हैं, हमें उस परमेश्वर को जानना चाहिये। जैसे कोई आकाश को चमड़े के समान अपने शरीर में लपेट नहीं सकता, वैसे ही अनंत परमात्मा के विस्तार की सीमा को बताने में कोई समर्थ नहीं हो सकता। परमात्मा सर्वव्यापक होने के कारण सबसे बड़ा है और सूक्ष्मरूप होने के कारण अणु है। माता के गर्भ में संतान का निर्माण बिना हाथ लगाये होता है, इसी प्रकार परमात्मा संसार को बनाता है। ईश्वर निराकार रहते हुए अपने सामर्थ्य से प्रकृति को साकार रूप में बदल देता है। माण्डूक्य उपनिषद् में कहा है कि किसी पदार्थ को समझने के लिए विस्तार से उसकी व्याख्या करनी पड़ती है। यह संसार उसी एक परमेश्वर ओ३म् की व्याख्या है। पूरा संसार उसी का बनाया हुआ है, इसलिए हमें आत्मा और अन्त:करण को समर्पित करके उसकी भक्ति करनी चाहिये।

प्रात:कालीन सत्संग में यजुर्वेद के इक्कीसवें अध्याय के मन्त्र की व्याख्या करते हुए **श्री सत्येन्द्र सिंह जी आर्य** ने कहा कि हम सब मनुष्यों को विद्वानों के सान्निध्य की कामना करनी चाहिये। उनका संग करके उपदेश ग्रहण करें। विद्वान्, शिक्षक, पण्डित आदि शब्द पर्यायवाची है। अध्यापक, उपदेशक प्राण-उदान वायु के समान ही जीवन में सुखदायक हैं। जैसे जल से वृक्ष जीवित रहता है, वैसे ही विद्या और उपदेश से मनुष्य की आत्मा को सुख पहुँचता है। गाँव में रहने वाले अशिक्षित मजदूर, किसानों का जीवन भी चलता है, किन्तु उनके जीवन में गाम्भीर्य, श्रेष्ठता, गरिमा, शालीनता, विचारशीलता नहीं होती है। जैसे हमारे शरीर में दोनों हाथ वस्तुओं को मिलाने और अलग करने के काम आते हैं, वैसे ही मित्र और वरुण के समान उत्तम विद्वानों के संग से हमें अच्छी-बुरी बातों का ज्ञान होने पर बुराई से दूर रहकर अच्छाई को ग्रहण करने की प्रेरणा मिलता है। बिना हाथों के या एक हाथ से विकलांग होने पर बोझ उठाने या बलपूर्वक कोई कार्य करने में बड़ी कठिनाई होती है, वैसे ही विद्वानों का संग न मिलने से हमारा जीवन बहुत कठिन होता है। किसी कार्य में सफलता के लिये विद्वानों का मार्गदर्शन आवश्यक है। महर्षि दयानन्द जी ने हमारे जीवन में काम आने वाली शिक्षाओं को बहुत सहज और सरल भाषा में स्पष्ट करके प्रकाशित किया। संसार में प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सुख चाहता है

और अपनी सन्तानों को सुसन्तान बनाना चाहता है। यह कार्य ईश्वर, वेद और विद्वानों के बिना सम्भव नहीं है। संसार में रहने का ढंग विद्वानों के संग से ही जान सकते हैं। माता-पिता ५-६ वर्ष तक बच्चों को सिखाते हैं, उसके बाद विद्यालयों और गुरुकुलों में पढ़ने के लिए भेजते हैं। जैसे भोजन हमारी नित्य आवश्यकता है, वैसे ही विद्वानों का संग हमें नित्य मिलना चाहिये।

आगे आपने बताया कि वेद सार्वभौमिक और सार्वकालिक ज्ञान के भण्डार हैं, इसलिए स्वामी दयानन्द जी ने कहा-''वेदों की ओर लौटो''। वेदों में मनुष्य जीवन में काम आने वाली सब विद्यायें हैं। परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व को संगठित रखने के उपाय भी वेदों में ही सर्वोत्तम ढंग से बताये गये है। वेद में ऐश्वर्यशाली जीवन जीने का उपदेश है। धर्मपूर्वक धन कमाने और उसे धर्म के अनुकूल ही अपने और पराये हित में खर्च करना चाहिये। परमात्मा वेदज्ञान के द्वारा श्रेष्ठ मनुष्यों को चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित कर भोग और मुक्ति का उपदेश करता है। यश और विद्या से मनुष्य सुखी जीवन बिता सकता है, इसलिये वेद के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में विद्या और धन की प्राप्ति के लिए धर्मयुक्त पुरुषार्थ अवश्य करना चाहिये। प्राप्त धन को अपने स्वास्थ्य, परिवार के पालन-पोषण और रोग निदान तथा व्यापार, उद्योग आदि की वृद्धि में खर्च करने के साथ ही धर्म और विद्या के प्रचार-प्रसार में भी आवश्यक रूप से लगाना चाहिये। पूँजीवादी अमेरिका आदि देशों के अवैदिक विचारधारा वाले लोग जो छल, कपट और अधर्म से धन प्राप्त करते हैं, उनको भौतिक सुख तो मिलता है, किन्तु उनके मन में प्रसन्नता, परस्पर सहयोग और सुख-दुःख को तटस्थता से सहन करने की भावना नहीं होती, इसलिये उनको आन्तरिक सुख नहीं मिलता है। सरकार को कर देने और सुपात्रों को दान करने पर ही धन उपभोग के योग्य बनता है। जो दान देने में कंजूस होता है, उसे धन के रक्षण की चिन्ता में नींद भी नहीं आती है। हमारे देश की संस्कृति में दान का बड़ा महत्त्व है। महाराणा प्रताप को युद्ध के लिए भामाशाह ने अपना पूरा खजाना दे दिया। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में गुरुकुल, आर्यसमाज की स्थापना के लिए लोगों ने भूमि, अन्न, धन आदि का बहुत दान किया। समाज के हित में खर्च करने का स्वभाव होना चाहिये। जो मनुष्य धन का दास होता है, वह कितना भी धन कमा ले, सुखी नहीं हो सकता, किन्तु जो धन का स्वामी होता है, वह धर्मपूर्वक जितना धन कमा सकता है, उसी से संतुष्ट रहता है। धन प्राप्ति के बाद अहंकार नहीं करना चाहिये और सहनशीलता भी बनी रहे। चोरी, डकैती, लूट, रिश्वत, छल-कपट आदि से प्राप्त किया हुआ धन, दुःखदायक होता है। परमात्मा ने हमें धन कमाने के लिए ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ दी हैं। वेद पुरुषार्थ से प्राप्त धन की प्रशंसा करता है।

आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न-२२ मई रविवार शाम को यह शिविर व्यायाम, लाठी, जूडो-कराटे, सूर्य नमस्कार, रस्सी पर आसन, मानव स्तूप, मानव पुल आदि भव्य प्रदर्शन के साथ समाप्त हो गया। समापन से एक दिन पूर्व शनिवार प्रातःकाल आर्यवीरों ने ऋषि उद्यान से भिनाय कोठी तक जुलूस निकालकर सामाजिक बुराइयों के प्रति जागरूकता का संदेश दिया। शिविर में प्रशिक्षण देने वाले सभी शिक्षकों और श्रेष्ठ आर्यवीरों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर आर्यवीर दल के प्रांतीय सह संचालक श्री देवेन्द्र जी ने आर्यवीर दल की स्थापना और उद्देश्यों की जानकारी देते हुए बताया कि इस दल का गठन आर्य समाज और उसके प्रचारकों की रक्षा के लिये किया गया है, जिससे वैदिक धर्म और संस्कृति का निर्बाध प्रचार हो सके। साथ-साथ देश की सेवा और सुरक्षा भी इस दल का आवश्यक क्रिया-कलाप है। अजमेर नगर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष माननीय श्री शिवशंकर जी हेडा, प्रसिद्ध उद्योगपति एवं दानवीर श्री कमल पंसारी जी और परोपकारिणी सभा के मंत्री श्री ओममुनि जी ने आर्यवीरों को संबोधित कर अपनी-अपनी प्रेरणाओं के साथ आशीर्वाद प्रदान किये। समारोह में परोपकारिणी सभा के कोषाध्यक्ष श्री सुभाष नवाल जी, सभा के सदस्य एवं विद्वान् श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य जी, आचार्य कर्मवीर जी, आचार्य सत्येन्द्र जी, श्री वासुदेव आर्य जी, अभिभावक माता-पिता, सहयोगी तथा अन्य दर्शकगण उपस्थित रहे। श्री हेमन्त आर्य जी ने ओजस्वी गीत सुनाकर आर्यवीरों को

प्रेरित किया। कार्यक्रम संचालक ने बताया कि वर्तमान में आर्यवीर दल अजमेर के बाहर पूरे राजस्थान प्रान्त और अन्य राज्यों में भी सक्रिय है। सभी आगन्तुक महानुभावों ने इस प्रकार के कार्यक्रम निरन्तर चलाते रहने के लिए भविष्य में भी पूर्ण सहयोग करने का संकल्प व्यक्त किया।

आर्य वीरांगना दल का प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन-३० मई सोमवार को शाम ६ बजे राजस्थान के विभिन्न स्थानों से आई हुई आर्य वीरांगनाओं के प्रशिक्षण शिविर का ऋषि उद्यान में शुभारम्भ हुआ। इसमें प्राथमिक विद्यालय से लेकर महाविद्यालय में पढ़ने वाली छात्रायें भाग ले रही हैं। परोपकारिणी सभा के प्रधान माननीय डॉ० धर्मवीर जी ने ध्वजारोहण के पश्चात् अपने संबोधन में कहा कि यह शिविर बालिकाओं के शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति में बहुत सहायक होगा। उन्होंने शिविरार्थियों को इस शिविर से पूर्ण लाभ लेने के लिए उत्साह पूर्वक सभी कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु प्रेरित किया, जिससे शिविर में प्राप्त शिक्षा जीवन भर काम आ सके। मुख्य अतिथि श्रीमती किरण मेहरा जी ने कहा कि सभी वीरांगनाओं को रानी दुर्गावती, रानी पद्मावती, झाँसी की रानी के समान बनने के लिए संकल्प करना चाहिये। इस अवसर पर श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य, श्री मुमुक्षु मुनि जी एवं अन्य आश्रमवासी उपस्थित रहे। इस शिविर में शारीरिक एवं बौद्धिक स्वास्थ्य के लिए विभिन्न व्यायाम, योगासन-प्राणायाम, यज्ञ-संध्योपासना आदि का अभ्यास कराया जायेगा। आत्मरक्षा के लिए जूडो-कराटे, लाठी-तलवार चलाने का भी प्रशिक्षण दिया जायेगा। बौद्धिक कक्षाओं में अन्य शिक्षिकाओं के साथ ही ऋषि उद्यान में साधनारत माता कंचन जी एवं बहन डॉ० अर्चना जी वीरांगनाओं का मार्गदर्शन किया।

प्रात:कालीन सत्संग में परोपकारिणी सभा के मन्त्री **श्री ओममुनि जी** ने पैंगोर जिला भरतपुर के संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द जी के बारे में बताया कि वे एक मन्दिर में रहते थे और मूर्तिपूजा न करते हुए भी मन्दिर के आसपास बहुत सफाई और सुन्दर व्यवस्था रखते थे। उनके कार्य-व्यवहार से भरतपुर के राजा किशनसिंह ने प्रसन्न होकर अपने राज्य के सबसे बड़े पुरस्कार के रूप में चाँदी का मेडल और प्रमाण-पत्र देकर उन्हें सम्मानित किया। स्वामी जी बहुत बड़े समाज सुधारक थे, पैंगोर के आसपास के क्षेत्रों में उन्होंने आर्य समाज का बहुत प्रचार किया। स्वामी जी का उस क्षेत्र के लोगों और राजा पर बड़ा प्रभाव था, इस बात से डरकर अंग्रेज सरकार ने उन्हें भरतपुर रियासत से बाहर निकलवा दिया। स्वामी जी भरतपुर से आगरा जाकर स्वामी श्रद्धानन्द जी के शुद्धि-कार्य से जुड़ गये। आगरा से स्वामी जी ब्यावर आ गये और ९२ वर्ष की आयु तक मृत्यु पर्यन्त यहीं रहे। उनको अपने जीवन में अच्छे संस्कार और विद्वानों, संन्यासियों का सत्संग मिला। वे संस्कृत के विद्वान् थे। बिड़ला जी आर्थिक सहयोग देकर स्वामी जी की सेवा करते थे। उनसे हमें प्रेरणा मिलती है कि हमें जो भी काम मिले, उसे निष्ठा और प्रसन्नता पूर्वक समय पर पूरा करना चाहिये। हम जहाँ भी रहें, चाहे वह अपना घर हो, किराये का मकान हो, धर्मशाला हो, मन्दिर हो या कोई आश्रम हो, उस जगह को और उसके आसपास के वातावरण को साफ-सुथरा रखने का प्रयास करें। चाहे राजा हो या प्रजा हो, गृहस्थ हो या संन्यासी हो, सबको साफ-सफाई अच्छी लगती है। जैसे हम आत्मा में सुख चाहते हैं, वैसे ही दूसरों को सत्य उपदेश से सुख पहुँचाना ही सच्चा धर्म और भगवान की पूजा है। संसार के उपकार का कार्य हमेशा करते रहना चाहिये। जात-पात, छुआछूत नहीं मानना चाहिये, उससे समाज बिखरता है, भाई से भाई अलग हो जाता है।

सायंकालीन सत्संग में 'उपदेश मंजरी' स्वाध्याय के क्रम में **उपाचार्य सत्येन्द्र जी** ने बताया कि संस्कृत संसार की सर्वोत्तम एवं पूर्ण वैज्ञानिक भाषा है। अन्य भाषाओं की उत्पत्ति संस्कृत के शब्दों से ही हुई है, इसलिये जब किसी देश का व्यक्ति इस भाषा को पढ़ता है तो उसे अन्य देश वालों के समान ही परिश्रम करना पड़ता है। स्वामी दयानन्द जी ने पूना के अपने प्रवचन में वेद की भाषा संस्कृत होने को उचित ठहराते हुए प्रमाणित किया कि वैदिक संस्कृत संसार की प्राचीनतम और सबसे सरल भाषा है। विद्वान् अपनी विद्वत्ता प्रदर्शित करने के लिए कठिन भाषा बोलते और लिखते हैं, किन्तु ईश्वर ऐसा नहीं करता। अब इस

बात को आधुनिक भाषा वैज्ञानिक भी स्वीकार कर चुके हैं। जैसे बच्चा अपने बचपन से अपने माता-पिता द्वारा बोले हुए शब्दों और उनके अर्थों को बहुत सरलता से समझता है, इसी प्रकार किसी भी मनुष्य को बचपन से वेद मन्त्रों और उनके अर्थों का अभ्यास कराया जाय तो उसे सहजता से समझ में आ जायेगा। प्रौढ़ होने पर किसी भी भाषा या अन्य विद्या को सीखना कठिन होता है। परमात्मा ने चारों वेदों को संस्कृत भाषा में प्रकाशित कर संसार के सब मनुष्यों पर बहुत उपकार किया है। जिस समय चारों वेदों का प्रकाश किया, उस समय संसार में कोई अन्य भाषा नहीं थी। जो वेद की आलोचना करते हैं, वे लोग वेद और उसकी महत्ता को नहीं जानते, इसलिये वेद की भाषा कठिन है या अव्यावहारिक है-इस प्रकार के संकीर्ण विचार रखते हैं। विश्व के सब देशों में जो भी मनुष्यों के श्रेष्ठ गुण-कर्म-स्वभाव हैं, उनका मूल कारण यही वेद ज्ञान है, भले ही वह उन लोगों तक किसी भी भाषा या महापुरुष द्वारा पहुँचा हो।

विशिष्ट व्यक्तित्व- डी.ए.वी. कॉलेज से अवकाश प्राप्त संस्कृत प्राध्यापक डॉ. श्री बाबूराम जी शास्त्री एवं श्रीमती शान्ति देवी जी के विवाह की पचासवीं वर्षगाँठ पर ऋषि उद्यान में विशेष यज्ञ एवं प्रीतिभोज का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा सभा प्रधान डॉ. धर्मवीर जी ने इस अवसर पर कहा कि श्री बाबूराम जी ने अपने जीवन में सैकड़ों विद्यार्थियों को पी-एच.डी. करवाकर शिक्षा के क्षेत्र में विशेष कीर्तिमान स्थापित किया है। उनके परिवार के अधिकांश सदस्य भी शिक्षण कार्य में लगे हुए हैं। इस अवसर पर उनके परिवार के सभी सदस्य उपस्थित थे।

* **डॉ. धर्मवीर जी की प्रचार यात्रा:- सम्पन्न कार्यक्रम:- (क)** ६-२७ मई २०१६ आई.आई.आई.टी. हैदराबाद।

* **आगामी कार्यक्रम:-** (**क**) ९-१० जून २०१६ मधुबनी बिहार में श्री वेदश्रमी जी के घर पर पारिवारिक सत्संग।

* **आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम:- सम्पन्न कार्यक्रम:-** (**क**) १४-१७ मई २०१६ - आर्यसमाज कण्डाघाट, हिमाचल प्रदेश के वार्षिकोत्सव में मुख्य वक्ता। (**ख**) २०-२२ मई २०१६ -गाजियाबाद।

(**ग**) २५-३१ मई २०१६ -आर्यसमाज मलाखा चौड़, सवाई माधोपुर के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान।

***आगामी कार्यक्रम:-** (**क**) ४-५ जून २०१६ आर्यसमाज कनीना रेवाड़ी। (**ख**) ५ जून २०१६ रोहतक मासिक सत्संग में मुख्य वक्ता। (**ग**) ६-७ जून २०१६ आर्यसमाज मोहिद्दीनपुर, रेवाड़ी में आर्यवीरदल शिविर में बौद्धिक। (**घ**) ८-१० जून २०१६ आर्यसमाज रुहालकी, रुड़की के वार्षिकोत्सव में मुख्य अतिथि। (**ङ**) १२-१९ जून २०१६ योग शिविर, ऋषि उद्यान, अजमेर।

***आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम:-** (**क**) १५-३१ मई २०१६ -संत निर्भयनाथ उच्च माध्यमिक विद्यालय बीकानेर में युवा निर्माण शिविर में प्रशिक्षक की भूमिका में।

***आगामी कार्यक्रम:-** (**क**) १ जून २०१६ पारिवारिक सत्संग मंगलोर, हरिद्वार। (**ख**) ५-१२ जून २०१६ आर्यवीर दल मोहिद्दीनपुर, रेवाड़ी, हरियाणा। (**ग**) १२-१९ जून २०१६ योग शिविर, ऋषि उद्यान, अजमेर।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

स्तुता मया वरदा वेदमाता-३६

द्वा विमो वातौ वात आ सिन्धो रा परावतः।
दक्षते अन्य आ वातु परान्यो वातु पद्रपः।।

यह सम्पूर्ण सूक्त एक मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिये शरीर के अन्दर चल रहे किन-किन कार्यों को हमें जानना चाहिये और उनसे कैसे लाभ उठाना चाहिए? इस बात का उल्लेख है। प्रथम मन्त्र में मानसिक रूप से हमारे उत्थान-पतन की चर्चा की गई है। देवता लोग पतन के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को उत्थान की ओर ले जाते हैं, उन्हें निष्पाप कर देते हैं। आगे बताया गया है कि इस शरीर में प्राणधारण वायु के माध्यम से हो रहा है। वायु शरीर में गति कर रहा है। यहाँ क्रिया भेद से दो प्रकार की गति हो रही है- एक वायु जब शरीर के अन्दर की ओर जा रही है, वह सिन्धु तक पहुँच रही है। दूसरी लौटने वालीवायु परावत तक जा रही है। सिन्धु क्या है? शरीर का वह स्थान जो वायु से पुष्ट हो रहा है। हृदय के अन्दर संचरित होने वाला रक्त, इस प्राण वायु से शुद्ध किया जा रहा है।

हृदय और फेफड़े इस शरीर में रक्त के सम्बन्ध में कार्य करने वाले दो मुख्य संस्थान हैं। शरीर का सारा रक्त हृदय में आता है और वहाँ से फेफडों में पहुँचता है। हृदय का कार्य शिराओं के माध्यम से रक्त का संग्रह करना और धमनियों के माध्यम से फेफडों और शरीर के अंगों में वितरण करना है। फेफडों का कार्य रक्त का शोधन करना है। फेफडों में लाखों कोष बने हुए हैं, इनमें रक्त जाता है और वहाँ से लौटकर हृदय में जमा होता है, जहाँ से फिर हृदय द्वारा शरीर के अंगों को भेजा जाता है। लोग कहते हैं कि शरीर में हृदय, जो रक्त संचार का केन्द्र है, उसका ज्ञान पाश्चात्य विद्वानों ने किया है, परन्तु छान्दोग्य उपनिषद् में हृदय की परिभाषा करते हुए कहा है- हृदय शब्द में तीन अक्षर हैं, इसके तीन कार्यों को बताते हैं- ह्र से हरति अर्थात् जो रक्त का संग्रह करता है। द से ददाति अर्थात् जो रक्त का वितरण करता है तथा य से यति अर्थात् गति करता है। जो लेता है, जो देता है और चलता रहता है, इसलिये उसे हृदय कहते हैं।

उपनिषद् में मस्तिष्क का कार्य, विचार भावना के अर्थ में भी हृदय शब्द का उपयोग हुआ है, परन्तु वायु के सम्बन्ध में जब हृदय कहा जायेगा, तब रक्त का संचरण करने वाले हृदय की बात की जायेगी। फेफडे रक्त का शोधन करते हैं, हृदय रक्त को शरीर से लेकर फेफडों को देता है और फेफडों से लेकर शरीर को देता है। इस क्रिया को करने के लिये वायु शरीर में आता है, प्रवेश करता है- उसे सिन्धु तक, हृदय तक प्रभावकारी होना चाहिये और बाहर की ओर भी वह वायु दूर तक जानी चाहिए। यहाँ परावतः दूर तक शब्द बहुत महत्वपूर्ण है, जब श्वास बाहर दूर तक जायेगा, तभी अन्दर तक जायेगा। यह स्वाभाविक प्रक्रिया है। गहरा श्वास लेने के लिए श्वास को बाहर दूर तक ले जाना होगा। श्वास छोटा होगा, तो अन्दर बाहर भी छोटा-छोटा ही रहेगा। वह रक्त को पूर्ण रूप से शुद्ध करने में समर्थ नहीं होगा। प्रथम सम्पूर्ण रक्त से शुद्ध वायु का संसर्ग नहीं हो पायेगा और रक्त के सम्पर्क में आयेगा, उसे भी सम्पूर्ण प्राण की प्राप्ति नहीं होगी। इसलिए यह अन्दर जाने वाला वायु बल का देने वाला है और बाहर जाने वाला वायु पाप=दोष को बाहर निकाल कर मनुष्य को स्वस्थ करता है।

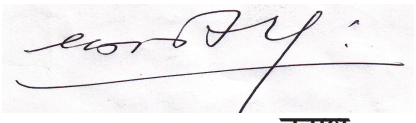

क्रमशः .....

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४**

आर्यजगत् के समाचार

१. प्रवेश प्रारम्भ- प्राचीन वैदिक आर्ष परम्परा के संवाहक गुरुकुल प्रभात आश्रम में पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी प्रवेश-परीक्षा २६ से ३० जून २०१६ तक सम्पन्न होने जा रही है। परीक्षा लिखित तथा मौखिक रूप में होगी। लिखित परीक्षा में ६० प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाला छात्र ही मौखिक परीक्षा का अधिकारी होगा। प्रतिदिन परीक्षा का समय पूर्वाह्न ९ से ११.३० बजे तक तथा अपराह्न २ से ४.३० बजे तक रहेगा। परीक्षार्थी छात्र शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से पूर्ण स्वस्थ तथा पञ्चम श्रेणी उत्तीर्ण एवं लगभग १० वर्ष का होना चाहिए। **सम्पर्क**- **०९७५८७४७९२०**

२. गुरुकुल का शुभारम्भ- समग्र गुजरात में केवल आर्ष पाठ्यक्रम से चलने वाला यह प्रथम कन्या गुरुकुल है। इस कन्या गुरुकुल में ट्रस्ट द्वारा छात्राओं को सब प्रकार की आवश्यक सुविधा तथा सुरक्षा निःशुल्क उपलब्ध होगी। ट्रस्ट की गौशाला से प्राप्त गीर की देशी गायों के शुद्ध दूध व घृत से निर्मित सात्विक आहार व सात्विक दिनचर्या के साथ सत्यार्थ प्रकाश में निर्दिष्ट आर्ष पाठ्यक्रम के अनुसार अध्ययन-अध्यापन इस गुरुकुल की विशेषता होगी। गुरुकुल के पूर्ण कालीन आवासीय इस पाठ्यक्रम में मुख्यरूप से पाणिनीय अष्टाध्यायी के क्रम से महाभाष्य पर्यन्त सम्पूर्ण संस्कृत व्याकरण, निरुक्त, छन्दः शास्त्र तथा सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, मीमांसा, वेदान्त, इन छः आर्ष दर्शनों के गम्भीर अध्यापन के साथ-साथ वेद, महर्षि दयानन्द के ग्रन्थ तथा अन्य वैदिक साहित्यों का स्वाध्याय भी होगा। इसके अतिरिक्त छात्राओं को योगदर्शन में वर्णित क्रियात्मक योग प्रशिक्षण भी सिखाया जायेगा। इस आर्ष-पाठ्यक्रम का गम्भीरता से अध्ययन करने वाली प्रत्येक छात्रा अपनी सर्वाङ्गीण आध्यात्मिक उन्नति करने में समर्थ होगी।

३. शिविर- कुछ ही वर्ष पूर्व परतवाड़ा विदर्भ में आर्य समाज स्थापित किया गया। श्री पंकज शाह नाम के आर्यवीर ने श्रीयुत् मोहन मधूकराव जी के साथ मिलकर इस समाज को सुदृढ़ करने के लिये पूरी शक्ति लगा दी। परोपकारिणी सभा के सहयोग व मार्गदर्शन को प्राप्तकर यह समाज पूरा वर्ष सक्रिय रहता है। सारा वर्ष कार्यक्रम होते रहते हैं। आसपास ग्रामों में, परिवारों में और युवकों में प्रचार होता रहता है। विद्वान् आते ही रहते हैं। जून मास में पुनः शिविर लग रहा है। भारत भर के आर्य युवक श्री पंकज शाह के अदम्य उत्साह से प्रेरणा पा सकते हैं।- **प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु**

चुनाव समाचार

४. आर्य समाज नई मण्डी, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- श्री आनन्दपालसिंह आर्य, **मन्त्री**- श्री आर.पी. शर्मा, **कोषाध्यक्ष**- श्री गुलबीरसिंह आर्य को चुना गया।

५. आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कानपुर नगर, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- श्री अशोक कुमार आनन्द, **मन्त्री**- श्री विनोद कुमार आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री अनिल चोपड़ा आर्य को चुना गया।

६. आर्य समाज मगरा पूंजला, जोधपुर, राज. के चुनाव में **प्रधान**- श्री ब्रह्मसिंह आर्य, **मन्त्री**- श्री जयसिंह भाटी, **कोषाध्यक्ष**- श्री महेश गहलोत आर्य को चुना गया।

७. आर्य समाज सैक्टर-१४, सोनीपत, हरि. के चुनाव में **प्रधान**- श्री ईश्वर दयाल शर्मा, **मन्त्री**- श्री युधिष्ठिर गुगलानी, **कोषाध्यक्ष**- श्री अशोक आर्य को चुना गया।

शोक सन्देश

८. श्री महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के प्रति अद्भुत समर्पण रखने वाले **श्री राधेश्याम जी कसेरा** का दि. १८ मई २०१६ को अकस्मात निधन हो गया। आपका जन्म टोंक, राज. में ही आर्य परिवार में हुआ था। सरकारी नौकरी करते हुए आपका स्थानान्तर कोटा, राज. हो जाने से वह स्थाई रूप से वहीं रहने लग गये थे। स्व. श्री राधेश्याम का अन्तिम संस्कार कोटा में वैदिक रीति से कराया गया। आपका भरा-पूरा परिवार है और आर्य समाज के प्रति समर्पण है। आपका अत्यन्त गतिशील जीवन था, जिसने कभी बैठना सीखा ही नहीं। महर्षि दयानन्द के अनन्यभक्त और वैदिक जीवन के प्रति अटूट श्रद्धा और पूर्ण समर्पण उनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ थी। आप अत्यन्त विनम्र, दयालु, परोपकार प्रिय, दीनबन्धु, सर्वहितैषी, सर्वहित साधक, बड़ों का आज्ञाकारी, मातृ-पितृ भक्त होते हुए कुछ उनके ऐसे व्यक्तिगत सिद्धान्त रहे, जिन पर वह कभी न झुके।

९. आर्य समाज शाहपुरा, जि. भीलवाड़ा, राज. में दि. २२ मई २०१६ को माता **अन्नपूर्णा जी** का अकस्मात् निधन हो गया। आप धार्मिक, वेदों की विदुषी एवं गौ भक्त थीं। माताजी की मृत्यु आर्य समाज के लिए अपूर्णीय क्षति रहेगी। **परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।**